दो शब्द

सांसारिकता के प्रेमी शायद ही इस सचाई को स्वीकार करने के लिए तैयार हों, पर यह निश्चित है कि आध्यात्मिकता की दुनिया में बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनका इन महानुभावों को, जो अपने अभिमान पर फूले नहीं समाते, कुछ भी ज्ञान नहीं और यही कारण है कि दिन दहाड़े मालिक के असहाय और निरपराध बच्चे अत्याचारी और कामनाओं के पुजारी मनुष्यों की लालसाओं के शिकार होकर मृत्यु की गोद में जा रहे हैं और बेधड़क खून की होली खेली जा रही है। मतलब यह कि आज जहाँ चारों ओर दिखावा, बनावट, और छल कपट का दौरदौरा है और ये अटल विपत्तियों की भांति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर छाये हुए हैं वहाँ मजहब भी इनकी छीना झपटी से सुरक्षित नहीं है। वास्तव में मजहब ही मनुष्य को विश्व-बन्धुत्व के सूत्र में बांध सकता है।

कुल मालिक ने मनुष्य को अपने ही नमूने पर बनाया है और उसे ऐसी सूक्ष्म और आत्मिक शक्तियां प्रदान की हैं जिनके जगा लेने मे मनुष्य हार्दिक शान्ति और आत्मिक सन्तोष प्राप्त कर सकता है। भगवत् प्रेम मनुष्य के जीवन के लिए एक जलता हुआ दीपक है जो उसकी अधकारमयी निराशा-भावनाओं को आशा की ज्योति दिखाता है और मनुष्य को नवजीवन देकर अमर शान्ति प्रदान करता है।

मैंने इस पुस्तक में भगवत् प्रेम की उन मंजिलो का चित्र खींचने का प्रयत्न किया है जो सच्चे प्रेमी को भगवन्त के साक्षात्कार के मार्ग में तय करनी पडती हैं। आशा है, वे सज्जन जिनके हृदय मे भगवत् प्रेम की आग प्रज्वलित है अवश्य ही इसका रुचि-पूर्वक अवलोकन करेंगे।

आगरा
१६ अक्तूबर, १६३६ } गुरदास राम

सूची

प्रीतम की गली में

प्रीतम की गली में

आह ! मेरा संसार कितना उजड़ा हुआ और सुनसान है !
यहाँ की धरती ईर्षा और द्वेष का निवास, संकीर्णता और निर्धनता का घर
चारों ओर असफलता और निराशा का शासन
प्रत्येक प्रभात दुःख और चिन्ता का प्रारंभ
प्रत्येक संन्ध्या आशा और साहस की वैरिन
हर्ष और सुख की कल्पना एक धुँधला सा स्वप्न !
यहाँ का कण कण मुझे पीड़ाओं की ओर खींचता है !

× × × ×

यहाँ के सूर्य की सुनहरी और पहली किरणें तेजहीन और दुखियारी दीख पड़ती हैं
आकाश की आँखों से आँसू टपकते दिखाई पड़ते हैं

यहाँ गहरी सहानुभूति अज्ञान की गोद में सोई हुई है
यहाँ जीवन की आकांक्षाओं और अभिलाषाओं की
चिता बनी है
न कोयल कूकती है, न बुलबुलें गाती हैं, न बहार के
आने की धूम है, न प्रेम के गीतों की गूंज!

× × × ×

आह यहाँ का अनुमान करते ही हृदय थरथरा
उठता है!
यहाँ का जीवन पराधीनता और पतन
आह! मेरा संसार अंधकार-मय है
चारो ओर दुःख की घटाएँ छा रही हैं
फूल खिलते हैं
कलियाँ मुस्कराती हैं
लेकिन कुछ देर पीछे ही मेरी दुःखभरी और निढाल
दशा का असर पड़ने से उनका सिर झुक
जाता है!
इस संसार में मेरी जीवन नैया एक भयंकर भंवर में
लहरों के बेपनाह थपेड़ों में हिचकोले खा रही है
किनारे का पता नहीं
न कभी उल्लास का दीपक प्रकाशित होता है

न आशा का दिया जलता है
न प्रेम की मदिरा मिलती है
आह ! मैं आज आँसू भर भर कर घटाटोप अंधेरे
में ठोकरें खा रहा हूँ
जानता हूँ, प्रेम मूर्तिमान् छल है
किन्तु ओ प्रीतम ! तुझे पाने के लिए मैं तेरी ओर
दौड़ता हूँ
समझता हूँ, तेरी मीठी मीठी बातें अन्त में कितनी
कड़वी निकलती हैं !
तेरे हृदयहारी आकर्षण मृत्यु के सन्देश हैं
तेरे धीरज दिलाने वाले शब्द
तेरी मधुर रागनियाँ
तेरे जादू भरे गीत
बस, छलना ही हैं !
हाँ, सब कुछ समझता हूँ लेकिन तुझे अपना बनाने
के लिए अपना सब से बढ़ कर प्रयत्न उपयोग
में लाने के लिए हर समय कमर कसे तैयार हूँ
तू ने मुझे प्रेम का वचन दिया
मैं ने तेरे कृपा पूर्ण प्रेम के बदले सब से प्रिय वस्तु
भेंट की

मैंने अपना संसार और उस की सभी ऊँची भूमिकाएँ
मदैव के लिए तेरे चरणों पर समर्पित कर दीं
तूने कहा—मैं तेरा हूँ
पर तेरी सारी प्रतिज्ञाएँ एक हृदयहारी मधुर स्वप्न
सिद्ध हुईं
तेरी निष्ठुरता और निर्दयता !
आह ! तूने मेरे प्रेम के गढ़ को तहस नहस कर दिया
मेरे जीवन के संसार को पैरों से मसल दिया
किन्तु मैं अब भी उस उजड़ी हुई बस्ती का शासक
तुझको ही मानता हूँ
मैं हर घड़ी तेरी ही याद में और तेरे ही ध्यान में
सिर झुकाये रहता हूँ
मैंने कितनी बार तय किया कि तुझ से न मिलूँ
कई बार निश्चित किया कि तुझे अपनी अभिलाषाओं
और अपने प्राणों का वैरी समझूं
मैंने सहस्रों बार समझा कि तू एक छलना के सिवा
और कुछ भी नहीं, तू मेरे अनिष्ट का कारण है
पर न जाने
तू कौन सी प्रबल शक्ति का स्वामी है
कि पहली ही चितवन में अपनी ओर खींच लेता है

न जाने तुझ में कौन सा आकर्षण छिपा हुआ है!

× × × ×

तेरे सुन्दर मुखड़े की एक झलक मुझे लोक पर-
लोक से बेपरवाह कर देती है
तेरी प्रेम भरी आँखों की एक हलकी सी चेष्टा मुझे
मतवाला बना देती है
तेरे कुछ धीरज के और प्रेम भरे शब्द मेरे लिए
जीवन का मधुर संदेश बन जाते हैं
और
मैं तेरी ओर बेबस-सा दौड़ पड़ता हूँ और अपना
सिर तेरे चरणों में झुका देता हूँ
और एक दम पुकार उठता हूँ
प्रेमद्वार का एक भिखारी हूँ
और तुझी को तुझ से माँगता हूँ!

यदि आज तुम मेरे पास होते !

मेरे प्रीतम ! मुझे कुछ भी ध्यान न था कि तेरे बिना मेरा जीवन इतना नीरस और फीका हो जायगा ! सचमुच मेरे हृदय की शान्ति तुझी से है और तेरी एक प्रेम भरी चितवन के ही आसरे है। इसलिए मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, प्यारे ! कि अब से अपने विचारों के आगे तेरे विचारों को और अपने भावों के ऊपर तेरे भावों को मुख्य रक्खूँगा। तेरी आज्ञा का पालन और तेरी अधीनता को अपने जीवन की रीति बनाऊँगा।

× × × ×

बरसात की ऋतु है। नन्हीं नन्हीं बूँदें बरस रही हैं लेकिन तुझे न पाकर मेरा जी घबराता है। बता प्यारे ! तू कहाँ है ! तेरी वे प्यार की बातें एक एक करके आज याद आ रही हैं। रह रह

कर तेरी ये अदाएं तड़पा रही हैं। चाँद बादलों में छिप गया है लेकिन तेरा वह चाँद-सा मुखड़ा मेरी आँखों के सामने है! बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं। दुनिया प्रसन्न है पर मैं उदास हूँ कि ऐ साजन! इस समय तू कहाँ है!

× × × ×

आज तुम मेरे पास होते! मैं तुम्हारी मीठी मीठी बातें सुनता और प्रेम भरी बातें सुनाता! आह! तुम कहाँ हो प्यारे? यदि तुम इस समय मेरे पास होते!

× × × ×

आह मैं दीवाना हूँ। दीवानेपन की आँधी मेरे जीवन के पल पल पर छा गई है और मैं उसकी लपेट में घास, फूस की भाँति उलझ कर उड़ा जा रहा हूँ और निर्बल और टूटी हुई नाव के तख्तों की तरह निर्दयी लहरों के थपेड़ों से बहा जा रहा हूँ। मेरे दिल की दुनिया बदल चुकी है। वह निर्मल और निस्वार्थ प्रेम जो मेरे हृदय की गहराइयों में एक अलसाई हुई कली के समान सो रहा था, व्याकुलता

के एक अथाह सागर में बदल गया है।

× × × ×

दुनिया मुझे पागल कहती है। संसार वाले मुझे दीवाना समझते हैं। पर क्या सचमुच मैं पागल हूँ, दीवाना हूँ? झूठ, ग़लत, एकदम ग़लत। संसार वाले झूठे हैं! मुझे दीवाना कहने वाले आपही दीवाने हैं। कपटी दुनिया आपही पागल है।

× × × ×

आओ मेरे सखे! प्रेम सागर में नहायें और हृदय मन्दिर में वह दिया जलायें जो कभी न बुझ सके!

लौकिक प्रेम से मालिक का प्रेम

महासुन्नपुर एक अच्छी भली रियासत थी जिसकी राजधानी का नाम ऑंगपुर था। नगर बहुत सुन्दर और बडा शानदार था। उसकी आबादी स्त्री पुरुष मिलाकर लगभग पचास हज़ार थी। प्रेमनाथ वहाँ का ऑनरेरी मजिस्ट्रेट था और शहर के ख़ास ख़ास आदमियों में गिना जाता था। प्रेमनाथ बडा प्रसन्नचित्त और भले स्वभाव का मनुष्य था और इसी वजह से हर जाति और धर्म के लोग उसको हृदय से प्यार करते थे। संसार के साज-सामान से घर भरा पडा था। मान बडाई हाथ बाँधे खडी रहती थी। सब कुछ था लेकिन घर में सन्तान न थी, इसीलिए वह दुःखी और उदास दिखाई देता था। बीसियों तरह के तावीज़ व गडे कराये गये लेकिन सब बेकार साबित हुए। अन्त में मनोकामना पूरी हुई और घर में

एक लड़का पैदा हुआ। चारों ओर से मुबारकबादी के संदेशों का ताँता बंध गया। घर में खुशी के बाजे बजने लगे और नगर में उत्सव मनाया जाने लगा।

लड़के का नाम ओमनाथ था। वह बचपन से ही बड़ा बुद्धिमान दीख पड़ता था। चेहरे पर बड़प्पन के चिह्न प्रकट थे। जब वह लड़का कुछ बड़ा हुआ तो पढ़ने के लिए स्कूल मे भर्ती करा दिया गया। ओमनाथ ने थोड़े समय में ही अपनी बुद्धिमानी से आशा से बढ़कर नाम पैदा कर लिया और पाँच सात साल मे एन्ट्रेन्स क्लास में पहुँच गया। ओमनाथ का अन्तिम साल था, लेकिन दुर्भाग्य से पिता का साया उसके सिर से उठ गया और कुछ महीने पीछे उसकी माँ भी मर गई। छोटी अवस्था ही से ओमनाथ का झुकाव ग़रीबों, अपाहिजों और मोहताजों को दान देने की ओर था और अब, जब कि वह प्रेमनाथ की सारी जायदाद का मालिक बन गया था, उसने ग़रीबों और मोहताजों के लिए ख़ैरातख़ाने खोल दिये और शहर भर में अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध हो गया।

× × × ×

सन्ध्या का समय था। ओमनाथ प्रति दिन की भाँति बाग की सैर करने गया। अचानक उसकी निगाह एक नवयुवती पर पडी और वह उसके प्रेम जाल में फस गया। बस फिर क्या था, उस स्त्री की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उसने अपनी सारी सम्पत्ति थोड़े ही समय में नष्ट कर दी और गले मे कफनी डाल कर दिन रात अपनी प्रेमिका की गली में घूमने लगा। शहर के लोग उसकी इस गिरी हुई दशा को देख कर दुखी हुआ करते और अक्सर समझाने बुझाने का प्रयत्न करते लेकिन जैसा कहा है—"आजकल जोशे जुनूँ है मेरे दीवाने को" ओमनाथ टस से मस न हुआ और दुनिया की लान तान से बेपरवाह रहते हुए लौकिक प्रेम की मंजिलें तय करने मे लगा रहा यहाँ तक कि यह दशा हो गई कि अब इसके पास न खाने को दाना था न पहनने को चिथडा था। अनाथ बच्चे की सी हालत थी।

× × × ×

सवेरे का समय था। ओमनाथ अपनी प्रेमिका के दर्शनों के लिए दरवाजे पर राह देखता खडा था कि

अचानक एक मालिक का प्यारा उधर से आ निकला। ओमनाथ लौकिक प्रेम की मंजिलें तय कर चुका था और भगवत् प्रेम के रंग बिरंगे फूलों के चुनने के योग्य हो गया था। बस उस मालिक के प्यारे की एक दृष्टि ही ने उसके दिल का प्याला मालिक के प्रेम से भर दिया। मालिक का प्रेम दुनियवी प्रेम को जीत चुका था, ओमनाथ अपनी प्रेमिका की याद भूल गया और दीवाना बन कर इस मालिक के प्यारे के चरणों पर जा गिरा और अपनी सारी पिछली राम कहानी सुना कर शेष जीवन उसकी सेवा में बिताने की इच्छा प्रकट की। उस साधुजन ने बड़ी प्रसन्नता से उसकी यह प्रार्थना स्वीकार करली और ओमनाथ मालिक के प्रेम की मंजिलें तय करता हुआ एक दिन वास्तविक मुक्ति को प्राप्त हो गया।

वास्तव में लौकिक प्रेम के पथ पर पग रखने के लिए हर एक मनुष्य का मनुष्यता के घाट पर आना आवश्यक है और आध्यात्मिक प्रेम के उपवन में प्रवेश करने के लिए हर एक मनुष्य को लौकिक प्रेम की मंजिल तय करना आवश्यक है।

प्रेम-दीक्षा

सहनशीलता की सीख और संतोष का उपदेश व्यर्थ है। मुझे रोने दो और जी भरकर रोने दो, अपनी तुच्छता और बेहैसियती पर। तुम क्यों रोकते हो? शायद इसलिए कि मेरे विलाप की अधिकता मेरे दुर्बल शरीर के लिए हानिकर सिद्ध होगी, लगातार रोना, विलाप करना मेरे दुःखी हृदय को टूक टूक कर देगा, असीम दुःख दर्द मुझे निढाल कर देगा। इसीलिए तुम मुझे रोने से रोकते हो न?

मेरा जीवन दुःखमय है, शोक से बेचैन है, तप रहा है। पीड़ा ही पीड़ा है, आग ही आग है। ऐसा जान पड़ता है······क्या कहूँ कैसी वेदना, कितने क्लेश का सागर मेरे हृदय मे तूफान उठा रहे हैं।

× × × ×

किन्तु ओ मिट्टी के पुतले! यह व्याकुलता, निराशा

और दर्दभरा रोना क्यों ? इसलिए कि तू बुरी वासना की नीची प्रवृत्तियों और कामनाओं की मनचाही पूर्ति में असमर्थ है ? इसीलिए कि तू चाहता है, बिना रोक टोक, बिना बाधा दुनिया के भोगों का स्वाद ले और कोई विरोध न करे। विरोध होता है, और तू तिलमिला उठता है, क्रोध के मारे भड़क उठता है और अपने आप को गहरे रहस्यों के जानने से लाचार देख कर दुःखी और व्याकुल हो जाता है।

× × × ×

ओ मानव ! नदी की गर्जनामयी तरंगों का भेद जानने के लिए उसकी छाती पर तैरना होगा, उसकी तह में डुबकी लगानी होगी, किन्तु तू कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं और केवल किनारे पर खड़े हो कर ही जीवन के अथाह सागर का भेद जानने का इच्छुक है। तुझे पता नहीं कि तेरा आपा सीमित है और तेरा जीवन केवल उस सँकरे दायरे में घूम रहा है जो तेरे कुटुम्बियों और प्रियजनों से मिल कर बना है। इसी लिए तेरा ज्ञान सीमित है, अनिश्चित और अपूर्ण है।

× × × ×

जीवन सग्राम के अभेद्य रहस्यो को समझना चाहता है तो अपने जीवन को सारे ससार की सपत्ति बना दे, या एक स्वतत्र पुजारी । पर तेरे लिए ससार को अपना बना लेना असभव है और न ही, ऐसी दशा में, तू ससार को छोड सकता है, क्योंकि तू ससार की कोलाहल भरी और मनोरजक घटनाओं से अलग नहीं हो सकता क्योंकि यह मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध है। पर बतला, तू ससार में जीने के लिए आया है या आँसुओं और मुस्कराहटों के बीच जैसे तैसे जीते रहने के लिए । आवश्यकता है इस चाह का, चाल का विरोध करने की, चिनगारी की तरह वेदना-हीन और बेदिल बन जाने की, एक भडकी हुई लपट की भाति लपकने की, सिंह की तरह मृत्यु से निडर होने की ।

ओ मनुष्य ! देख तेरे भीतर प्रेम करने का भाव सबसे ऊँचे दर्जे का विद्यमान है और शायद तुझे ज्ञान नहीं कि वह सबका प्रियतम या जगत् का पालक प्रभु भी "प्रेम" ही है और प्रेम की धुरी के चारों ओर ही यह सारी रचना घूम रही है । फिर क्या तेरे लिए सम्भव नहीं है कि इस सबसे अच्छी दैवी सपत्ति और मुक्ति के साधन को काम मे लाकर सच्चा

सुख और शान्ति प्राप्त करे? पर हाँ, संसार के भूखे मनुष्यों ने इस अमूल्य दात को ईर्षा, लोभ की कुरूप भद्दी पोशाक में छिपा दिया और उसकी सुन्दरता, मधुरता और मनोहरता नष्ट कर दी। यह प्रेम नहीं, कामुकता है।

× × × ×

ओ मनुष्य! प्रेम का पाठ पढ़ना है तो बुलबुल से न पूछ जो अपनी प्यास बुझाने के लिए फूल पर चोंचें मार मार कर उसके कोमल शरीर को घायल कर देती है। प्रेम का पाठ पतिंगे से पूछ जो दिये की लौ के चारों ओर घूमकर अपना आपा मिटा देता है। प्रेम का पाठ चकोर से पूछ जो चन्द्रमा की समीपता पाने के लिए लम्बी यात्रा का कष्ट सहता है और बराबर प्रयत्न करता रहता है, यहाँ तक कि प्राण गवाँ देता है। इसका नाम है अनुराग, इसका नाम है प्रेम!

× × × ×

ओ मनुष्य! क्या यह नहीं हो सकता कि तू भी मीराबाई या मंसूर की तरह प्रेम करे और एक स्नेही प्रेमी श्रद्धालु के समान कुल मालिक के साथ पवित्र

प्रेम का नाता जोड़े ।

प्रेम का अर्थ पूजा है और पूजा एक विशुद्ध नम्रता है जो तेरे हृदय को शीशे की तरह निर्मल और पवित्र कर देता है जिससे कि तू उसमें उस प्रीतम का प्रकाश देख सके । यह है तेरा जीवन और यह है तेरा आदर्श !

भगवत् प्रेम के पथ पर

नूराबाद एक छोटा सा कस्बा था जिसकी आबादी लगभग ढाई हज़ार स्त्री पुरुषों की थी। लोग साधारणतया सुखी और निश्चिन्त थे लेकिन बहुत ही सरल प्रकृति के थे। चिरागदीन वहाँ का मुखिया था जो बहुत ही चञ्चल प्रकृति और कठोर हृदय था। मालिक की दया से उसके साधन बहुत बड़े और उसकी पहुँच बहुत दूर तक थी। घर में सोने चांदी के ढेर लगे थे। और यही कारण था कि कस्बे के निवासी उससे डरते थे। वे अक्सर इकट्ठे होकर उसके अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाते थे। पर चूँकि अधिकाश लोगों को उस से काम पडता रहता था इसलिए अपनी बेबसी और लाचारी पर दुःख प्रकट करने के सिवा कुछ न कर सकते थे।

२

सवेरे का समय था। चिरागदीन के घर लडका पैदा होने का समाचार सारे कस्बे मे फैल गया। चारों ओर से बधाइयों का ताता बँध गया। घर में खुशी के बाजे बजने लगे। स्वयं चिरागदीन बाहर खडा हुआ अपाहिजों को चीजें बाँट रहा था कि अचानक एक साधू भी अपना कचकोल लेकर दान लेने के लिए आगे बढा। ठीक उसी क्षण भीतर से नौकर आया और चिरागदीन को सूचना दी कि नवजात बालक की तबियत बिगड़ गई है और उसकी माँ भी मृत्यु-शय्या पर पडी हुई है। यह सुनते ही चिरागदीन ने साधू का कचकोल धरती पर दे मारा और घर की ओर चल दिया। साधू भौचक्का-सा रह गया। उसके मुँह से यही शब्द निकले—

चन्द रोज़ा है बाबा तेरी जिन्दगानी
क्यों करता नाहक़ इस पर गुमानी

३

चिरागदीन ने अपनी स्त्री की चिन्ताजनक दशा देखी तो व्याकुल हो गया और तुरन्त ही क़स्बे के हकीम

और वैद्य बुलाये। बीसो औषधियाँ दी गईं पर एक भी उपयोगी और लाभदायक सिद्ध न हुई। कुछ ही घंटे बाद बच्चे और उसकी माँ ने दम तोड दिया। घर में कोहराम मच गया। चिरागदीन ने रो पीट कर आसमान सिर पर उठा लिया। कस्बे के लोग दुःख प्रकट करने के लिए इकट्ठे हो गये।

४

सध्या का समय था। आकाश पर बादल छाये हुए थे। बिजली चमक रही थी। देखते देखते मूसलाधार पानी बरसने लगा। चिरागदीन को अपने पालतू पशुओं की तनिक भी सुधि न थी। अकस्मात् आकाश पर बिजली चमकी और चिरागदीन की भैंसों पर आ गिरी जिससे उसका घर भी भस्म हो गया। चिरागदीन के दुःख की सीमा न रही। शोक से निढाल होगया, दुनिया अँधेरी दीखने लगी। आखिरकार क़स्बे को छोड़ने का निश्चय कर लिया। हाथ में लोटा लिया और जगल की ओर निकल गया।

गाँव में कानाफूसी हो रही थी कि निस्सदेह मालिक के घर न्याय है। सचमुच अत्याचार का बेडा भर

कर डूबता है। आखिर अन्याय की भी सीमा होती है। मतलब यह कि प्रत्येक छोटे बड़े के मुँह मे यही शब्द थे कि चिरागदीन के अभिमान ने ही उसे यह दिन दिखाया।

५

चिरागदीन अभी क़स्बे के बाहर निकल भी न पाया था कि वही साधू जिसका कचकोल उसने पृथ्वी पर दे मारा था सामने से आ निकला। पूछा, यह क्या दशा बना रक्खी है। चिरागदीन फूट फूट कर रोने लगा और साधू के पैरों पर गिर कर क्षमा मॉगने लगा और अपनी सारी रामकहानी कह सुनाई। साधू के मुँह मे तुरन्त ही वही पद निकला—

चन्द रोज़ा है याना तेरी ज़िन्दगानी
क्यों करता है नाहक़ इस पर गुमानी

चिरागदीन ने लज्जा के मारे अपनी गर्दन झुका ली पर साधू ने चिरागदीन को धीरज दिया और समझाया कि यह जीवन कुछ दिना का है, यहाँ के साज़-सामान नाशमान और अस्थिर हैं। सुख चैन, धन सम्पत्ति, कोई भी वस्तु स्थायी नहीं। बस इन्हें प्राप्त

करके अभिमान करना एकदम नादानी है । इस नाशमान संसार में मनुष्य का सच्चा सहानुभूति रखने वाला हो सकता है तो सतगुरु, मनुष्य का ठीक पथ-प्रदर्शन कर सकता है तो सतगुरु और सतगुरु के चरणों में प्रेम उत्पन्न करना और उनकी सेवा करना कुलमालिक से प्रेम और उसकी सेवा करना है । जंगल में चले जाने मे न वास्तविक सुख प्राप्त हो सकता है न संसार से निश्चिन्तता ! छोड़ इस इरादे को, खोज कर सतगुरु की, निछावर कर दे अपने तन और मन को उनके चरणों पर । फिर प्राप्त होगा सच्चा सुख और सच्ची शान्ति जिसके लिए तू और सारा संसार भटकता फिरता है ।

६

चिराग़दीन उसके पैरों पर गिर पड़ा। आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे । हाथ जोड़ कर पूछा—ऐ मेरे दुःख के साथी ! मैं अंधा हूँ, विपत्ति में फँसा हुआ हूँ, सच्चे सुख का खोजी हूँ, यदि तू मेरी अभिलाषा पूरी कर सकता है तो निराश न कर. मैं जन्म भर तेरा उपकार न भूलूँगा ।

साधू ने एक विशेष ढंग से उस पर दृष्टि डाली और एक ही दृष्टि ने काम बना दिया और उसके हृदय के प्याले को भगवत् प्रेम से भर दिया। चिरागदीन अब वह चिरागदीन न था। उसे सच्चा गुरु मिल चुका था। चिरागदीन ने दृढ़ता के साथ उसका पल्ला पकड़ लिया और शेष जीवन उसकी सेवा में बिता कर प्रेम के प्याले भर भर पिये।

प्रत्येक मनुष्य सच्चे मालिक की दया दृष्टि का अधिकारी बन सकता है

वसन्त ऋतु थी। सन्ध्या का समय था। चारों ओर हरियाली लहलहा रही थी। पक्षी मनोहर सुरीले राग गाने में मग्न थे। हवा भीनी भीनी सुगन्ध से भरी हुई थी, परन्तु मैं दिन भर के काम-काज से थका-मांदा, दुःख के सागर में डूबा हुआ था। निराशा के कारण तबियत गिरी हुई थी और रह रह कर यही विचार उठता था कि आखिर मेरे संसार मे आने का उद्देश्य क्या हो सकता है। ऐसी ही दशा मे मैं नगर के एक सुन्दर बाग की ओर चल दिया और कुछ ही मिनटों में वहाँ जा पहुँचा। बाग भाँति भाँति के मनो-हर फूलों से सजा हुआ था। प्रत्येक कली, हर एक फूल नई ही अदा दिखा रहा था। मैंने देखा कि फूल

आपस में कानाफूसी कर रहे हैं कि अभी उनका स्वामी आयेगा और उन्हें अपने गले का हार बनायेगा।

मैं एक दम ठहर गया और एक सुन्दर फूल से यों बातें करने लगा— भाई, ज़रा समझ बूझ से काम ले। तेरा जीवन कुछ ही क्षणों का है और अभी-अभी बाग़ का मालिक आयेगा और तुझे चुन कर अपने घर ले जायगा। फिर बता किस बिरते पर इतना गर्व करता है।

फूल मुस्कराया और बोला— क्या तुम्हें पता नहीं है कि सृष्टि नियम संसार की हर एक वस्तु को दूसरों की सेवा में लगाये हुए हैं? बस मेरा कल्याण, मेरा कर्तव्य पालन इसी में है कि बाग़ का स्वामी शीघ्र आये और मुझे चुन कर अपने गले का हार बनाले।

फूल के इन सार्थक शब्दों ने मेरे हृदय पर बड़ा सुखद प्रभाव डाला। मैंने पूछा—तो क्या मैं भी किसी के गले का हार बनने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता हूँ। फूल ने ज़रा कठोरता के स्वर में उत्तर दिया—हाँ, अपने स्वामी के।

मैं—कौन स्वामी?

फूल—मेरे स्वामी के स्वामी।

मैं— तो मैं कैसे उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर सकता हूँ ?

फूल— सुनो, और जरा कान देकर सुनो—
"नसीहत गोशकुन जानाँ, कि अजजां दोस्त तर दारन्द।
जवानाने सआदतमन्द, पन्दे पीरे दाना रा।"
(अर्थात सच्चे मित्र की सीख को जरा कान देकर सुनो जैसे कि आज्ञाकारी नवयुवक बुद्धिमान बड़े बूढ़ों की शिक्षा की प्राणों से भी अधिक क़दर करते हैं)

देखो, कुछ दिन पहले मैं भी एक नन्हीं सी कली था, पर कृपालु प्रकृति ने प्रकाश और हवा दे कर मुझे एक सुन्दर फूल बना दिया, वह मनोहरता उत्पन्न कर दी जिससे मनुष्य मेरी ओर खिंचा चला आता है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, उसी कृपालु प्रकृति ने तुम्हारे लिए भी ऐसे प्रबन्ध किये हैं कि यदि तुम उन के अनुसार चल कर उनसे लाभ उठाने का प्रयत्न करो तो न केवल मनुष्य का बल्कि कुल मालिक का भी ध्यान अपनी ओर खींच सकते हो।

मैं—(कुछ दुविधा में पड कर) तो फिर वह कौनसा साधन है कि जिससे वह कुल मालिक मेरी ओर ध्यान दे ?

फूल— सुन्दरता !

मैं— पर सुन्दरता तो मालिक की दात है, उसी की देन है !

फूल— हाँ हाँ, लेकिन कुल मालिक ने मनुष्य को ऐसी समझ बूझ दी है कि उसका ठीक ठीक उपयोग करने से वह अपने मे ऐसे गुण उत्पन्न कर सकता है कि वह पवित्र जगत पिता उससे प्यार करने लगे ।

मैं— नहीं नहीं, क्या मैं और क्या मेरी बिसात । धूल का एक कण और कुल मालिक की प्रसन्नता प्राप्त करने का साहस !

फूल— हाँ, पर तुम्हे पता नहीं कि कुछ दिन पहले मै भी कुछ न था, बस राई के बराबर एक दाना था, पर उदार प्रकृति की कृपा से आज एक सुन्दर फूल बन गया हूँ और अपनी सुगन्ध से सारे उपवन को सुवासित कर रहा हूँ । इसी प्रकार मनुष्य भी अपने में ऐसे गुण उत्पन्न कर सकता है और ऐसे ऐसे प्रशंसनीय काम कर सकता है जिनसे न केवल मनुष्य जाति को अपना प्रशंसक बना सकता है बल्कि कुल मालिक की दया दृष्टि का अधिकारी बन सकता है । बस जरा साहस करो और अपने आप को सुसज्जित

करके जगत् पिता के गले का हार बनाने का प्रयत्न करो।

ये शब्द सुनते ही मेरा दुःख-दर्द दूर होगया। एक सच्चे प्रेम की सी दशा छा गई। लोक परलोक से कुछ निर्बंध और बेपरवाह हो गया और कुल मालिक की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए तन मन से प्रयत्न करने लगा।

वास्तव में मनुष्य यदि चाहे तो न केवल देवता और हंस की गति प्राप्त कर सकता है बल्कि कुल मालिक से तद्रूप हो सकता है।

२

सोहंनाथ कस्बे का पुरोहित था, वहुत ही सादा प्रकृति का और समझदार था। क़स्बे की सारी बड़ी बड़ी बातों का निपटारा वही किया करता था और कस्बे के रहने वाले आशा और अनुमान से बढ़ कर उसका सम्मान किया करते थे। बुध के दिन कस्बे के निवासी एक बड़े मन्दिर मे जमा हुआ करते थे और मूर्ति की पूजा करके अपनी भक्ति और श्रद्धा प्रकट किया करते थे। इसके अतिरिक्त कस्बे में सदावर्त जारी था और यात्रियों के सत्कार का संतोषजनक प्रवन्ध था। लोग सुखी और सन्तुष्ट थे।

३

कस्बे के बाहर एक साधारण सी झोंपड़ी थी जिसमे सोहनाथ रहा करता था। सोहंनाथ बड़ा ही सत्यभक्त, बुद्धिमान और अच्छे स्वभाव का था। ईमानदारी उसके जीवन का सिद्धान्त था। चौबीसों घण्टे मालिक की याद में लीन और उसके प्रेम में मस्त रहता था। यद्यपि जीवन निर्वाह के साधन अत्यन्त सीमित थे, तो भी बड़ी कठिनता से एक बार का खाना मिल ही जाता था और यह इस

रहता था। कस्बे के निवासियों की सेवा करना उसका मुख्य कर्त्तव्य था और यही कारण था कि सभी छोटे-बड़ों के हृदयों में उसने घर कर लिया था और गाँव के बड़े बड़े लोग उसकी सेवा में उपस्थित होते थे और बड़े-बड़े गूढ़ विषयों में उसकी राय माँगा करते थे। कस्बे के धनवान् और दूसरे प्रतिष्ठित जन अक्सर श्रद्धा भाव से उसे बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करते पर वह स्वीकृत करने में लाचारी प्रकट करता और यह कह देता—

सर्दी थी। स्वभावतः उसका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा और वह निमोनिया के रोग में ग्रस्त हो गया। सबेरा हो गया और सोहंनाथ कुछ वेहोशी की दशा में पड़ा था। गाँव वालों को ज्ञात हुआ तो तुरन्त उसे उठाकर गाँव में ले गये और उसकी चिकित्सा में कोई कसर नहीं रक्खी। गाँव मे सिक्के का चलन न था। हाँ, वस्तुओं के बदले वस्तुओं का लेन-देन करके जीवन की आवश्यकताएं पूरी की जाती थीं। इसलिए गाँव के प्रत्येक व्यक्ति ने सोहंनाथ को भाँति भाँति की वस्तुएं भेंट कीं किन्तु उसने पहले ही की भाँति लेने से इन्कार कर दिया और एक दम उसके मुख से वही शब्द निकले—

खुश हूँ मैं उस हालत मे, जिसमें उसको रखना मक्सूद है।
बेहतरी मेरी है इसमें, शिकवा करना बेसूद है॥

५

दिन बीतते गये और सोहंनाथ अच्छा होता गया। इसी बीच में उसे मालिक का दर्शन प्राप्त हुआ। अब सोहंनाथ बिलकुल बदल चुका था। उसका चेहरा पहले से बहुत अधिक तेजस्वी था। उसकी आँखें आगे से अधिक आकर्षक और प्रकाशवान् थीं

और कस्बे का जो भी निवासी उसकी सेवा के लिए आता उसके अन्दर यह बडा परिवर्तन देखकर आश्चर्य मे रह जाता और उसके पैरों पर सिर झुकाये बिना न रह सकता।

६

कुछ ही दिनों में गाँव के सभी निवासी उसके प्रेमी हो गये और उसे अपना आध्यात्मिक गुरु, सच्चा पथ प्रदर्शक और सच्चा मित्र समझने लगे। गाँव के बड़े बडे लोगों ने सोहंनाथ से प्रार्थना की कि उनकी सारी सम्पत्ति उसके चरणों पर निछावर है और वह अब उनका पथ-प्रदर्शन करे। सोहंनाथ ने बडी गम्भीरता से शिक्षा दी—तोड़ दो पुरानी कुप्रथाओं की जंजीरों को, छोड़ो पुराने विचारों को, लग जाओ सच्चे मालिक की याद में, पैदा करो अगाध प्रेम उसके चरण कमलों में, यही है साधन सच्चे सुख और शान्ति के प्राप्त करने का। देखो, शुभ कर्मों का फल केवल कुछ दिन की सासारिक भोग विलास की प्राप्ति हो सकती है न कि वास्तविक स्वतन्त्रता और सच्ची मुक्ति।

७

अब क़स्बे के सभी निवासी सोहनाथ की चरण-शरण ग्रहण किये हुए हैं और जी जान से उसके आदेशों पर चलते हैं। गाँव मे चारों ओर प्रेम और शान्ति का राज्य है, मायिकता की शक्तियों की करारी हार हो रही है और आध्यात्मिकता की भीनी भीनी सुगन्ध सारे वायुमण्डल को सुवासित कर रही है। वास्तव मे कुल मालिक की याद ही वह नेमत है जिससे इस संसार में सुख-शान्ति स्थापित हो सकती है, नहीं तो सांसारिक साज सामान, राजपाट, विद्या, विज्ञान, दर्शन आदि इस सम्बन्ध मे सहायक नहीं सिद्ध हो सकते ।

पतझड़ के पश्चात् बसन्त ऋतु आने वाली है

पतझड़ का मौसम था। हर एक छोटे-बड़े का मुँह कुम्हलाया हुआ था। पेड़-पौदे मुरझाये हुए थे। फल और कलियाँ निर्जीव-सी दीख पड़ती थीं। जिधर देखो पीलापन छाया हुआ था। संध्या का समय था। मैं सैर के लिए एक छोटे से बाग में चला गया। उदासी और निराशा के विचारों ने दिल और दिमाग पर अधिकार कर रक्खा था। इसलिए मैं सोच-विचार मे मग्न एक पेड़ के नीचे बैठ गया। पेड करीब करीब सूखा हुआ था, पत्तों और टहनियों से कोरा था। मैंने कहा— भाई! अब तो तुम्हें अपना जीवन बहुत रूखा फीका मालूम होता होगा। तुम्हारा यौवन उजड चुका है और ऐसा जान पडता है कि कुछ ही दिनों के मेहमान हो। पेड़ मेरे ये शब्द सुनकर क्रोध की आग से भड़क उठा और बडे क्रुद्ध

स्वर म बोला, "ऐ नादान ! क्या तुझे प्राकृतिक नियमों की जरा भी जानकारी नहीं है ? केवल थोड़े दिनों की बात और है, मैं एक नये जीवन और नये उत्साह में प्रविष्ट होने को हूँ। नये नये पत्ते और नई नई टहनियाँ मेरी सुन्दरता को दुगनी कर देंगी और थोड़े ही समय बाद में तेरे सत्कार के लिए अपने मीठे मीठे फल तेरे सामने उपस्थित कर सकूँगा। और देख ! दोपहर की कड़ी तपन और जलन के बाद शाम को कैसी ठण्डी ठण्डी हवा चलती है जो तुझे, मुझे और हर एक छोटे बड़े को नया जीवन देती है। और देख, प्रत्येक मनुष्य पर ऊँच नीच दशाएँ आती हैं, लेकिन तुझे ज्ञात होना चाहिये कि गर्म और ठंडे झोंको के बाद अवश्य ही सुखद हवाएं चलती हैं। प्रत्येक समाज, प्रत्येक जाति और हर एक राज्य और हर मजहब को इस दौर मे हो कर जाना पड़ता है। तू अभी नादान है, दुनिया का बहुत कम अनुभव रखता है लेकिन उचित समय आने पर तुझे अपने आप पतझड़ की ऋतु का महत्त्व समझ मे आ जायगा। और देख ! सच्चे मालिक की प्रेम वाटिका के प्रेमी को किन किन दशाओं में

होकर जाना पडता है और किस प्रकार विरह, बेकली और घबराहट के बाद प्रेम की धारा प्रवाहित होती है। तो फिर मेरी शुष्कता के बाद भी बसन्त ऋतु का आगमन पक्की बात समझनी चाहिए।

देख! और ध्यान देकर मेरी सीख सुन और इस अनमोल मोती को जीवन का सहारा बना। इससे तेरा जीवन थोडा बहुत मधुर और सुखमय बन सकता है। याद रख, तुझ पर भी गरम और ठण्डी हवाओं के झोंके आयेंगे लेकिन तेरी बुद्धिमत्ता और कल्याण इसी मे है कि सासारिक विपत्तियों का सामना होने पर धैर्य, विश्वास और साहस को हाथ से न खो बैठे। देख, यद्यपि इन दिनों पतझड है, लेकिन मेरे हृदय मे कृपालु प्रकृति की दया और देन, कृपा और उदारता के लिए पूरी श्रद्धा है और मुझे निश्चय और पूरा विश्वास है कि कुछ ही दिनों में प्रातः वायु के सुखद झोंके मेरे भीतर नया जीवन फूँक देंगे और मैं फिर से नवजीवन पाकर अपने कर्त्तव्य का भली भाँति पालन कर सकूँगा!

मैंने पेड की यह शिक्षा गाँठ बाँध ली और अपने जीवन को उसके अनुसार ढालने का प्रयत्न किया।

कष्टों और विपत्तियों की घटाएँ घिर घिर कर आईं किन्तु मेरा धैर्य तनिक भी विचलित न हुआ और मैं मालिक की दया से एक सुदृढ़ चट्टान की भाँति खड़ा रहा और मैंने कभी किसी भी अवसर पर धैर्य, विश्वास और उत्साह को हाथ से न जाने दिया। और देख, पेड़ की भविष्य वाणी, कि मजहब को भी इस दौर से गुजरना पड़ेगा। आज रंग लाई। अतएव इन दिनों कुलमालिक ने मजहब को पतझड़ की ऋतु में गुजारने की मौज फरमाई है। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे पतझड़ के बाद अवश्य ही बहार की ऋतु आती है, मजहब पर भी शीघ्र ही एक नया युग और नया यौवन आने वाला है और हम देखेंगे कि मजहब अपनी भीनी भीनी सुगन्ध से सारे संसार को सुवासित कर देगा।

बीसवीं शताब्दी के मनुष्य से

हमारे नगर में एक सुन्दर बाग है। बाग का माली बड़ा दानी और उदार हृदय है। छोटे-बड़े हर एक को उसमें सैर करने की आज्ञा है। मैं भी अक्सर सैर करने के लिए जाया करता हूँ। वहाँ भाँति-भाँति के पेड़ हैं, फल हैं, फूल हैं। मेरी दृष्टि अक्सर चमेली की एक कली की ओर खिंच जाती है। कुछ दिन हुए इस पेड़ पर कली का नाम तक न था और आज देखता हूँ कि अनगिनती कलियों से लदा खड़ा है। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती जब मैं कृपालु प्रकृति के प्रबन्ध में प्रगति और स्वरैकता के नियम (Law of Progress and Harmony) को *क्रियाशील देखता हूँ। निरीक्षण* और अनुभव से मुझे पूरा निश्चय हो गया है कि इस पृथ्वी पर प्रत्येक वनस्पति, पशु और मनुष्य का पग

कष्टों और विपत्तियों की घटाएँ घिर घिर कर आईं किन्तु मेरा धैर्य तनिक भी विचलित न हुआ और मैं मालिक की दया से एक सुदृढ़ चट्टान की भाँति खड़ा रहा और मैंने कभी किसी भी अवसर पर धैर्य, विश्वास और उत्साह को हाथ से न जाने दिया। और देख, पेड़ की भविष्य वाणी, कि मजहब को भी इस दौर से गुजरना पड़ेगा। आज रंग लाई। अतएव इन दिनों कुलमालिक ने मजहब को पतझड़ की ऋतु से गुजारने की मौज फरमाई है। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे पतझड के बाद अवश्य ही बहार की ऋतु आती है, मजहब पर भी शीघ्र ही एक नया युग और नया यौवन आने वाला है और हम देखेंगे कि मजहब अपनी भीनी भीनी सुगन्ध से सारे संसार को सुवासित कर देगा।

बीसवीं शताब्दी के मनुष्य से

हमारे नगर में एक सुन्दर बाग है। बाग का माली बड़ा दानी और उदार-हृदय है। छोटे-बड़े हर एक को उसमे सैर करने की आज्ञा है। मैं भी अक्सर सैर करने के लिए जाया करता हूँ। वहाँ भाँति-भाँति के पेड़ हैं, फल हैं, फूल हैं। मेरी दृष्टि अक्सर चमेली की एक कली की ओर खिंच जाती है। कुछ दिन हुए इस पेड़ पर कली का नाम तक न था और आज देखता हूँ कि अनगिनती कलियो से लदा खड़ा है। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती जब मैं कृपालु प्रकृति के प्रबन्ध में प्रगति और स्वरैकता के नियम (Law of Progress and Harmony) को क्रियाशील देखता हूँ। निरीक्षण और अनुभव से मुझे पूरा निश्चय हो गया है कि इस पृथ्वी पर प्रत्येक वनस्पति, पशु और मनुष्य का पग

उन्नति की ओर बढ रहा है।

यदि मनुष्य ज़रा समझ से काम ले और सृष्टि नियमों का ठीक ढंग से पालन करे तो अवश्य ही उसके दुःखों में बहुत कुछ कमी हो सकती है और उसका जीवन सुखी और शान्तिमय बन सकता है। जब कि दयालु प्रकृति हर पेड और हर फल फूल में आये दिन नया जीवन फूँकती है तो, बुद्धि कहती है, उसने अवश्य मनुष्य की, जो कि बुद्धि और विवेक का स्वामी है और जिसे सब जीवधारियों मे श्रेष्ठ कहा जाता है, उन्नति और भलाई का प्रबन्ध किया होगा। इसलिए मनुष्य के लिए आवश्यक हो जाता है कि अपने आपको कृपालु प्रकृति के हाथों सौंप दे और सृष्टि के नियमों का पालन करके जीवन को सुखमय और शान्ति पूर्ण बनाये। लेकिन आह ! न जाने मनुष्य की समझ बूझ को क्या हो गया कि न तो कृपालु प्रकृति की दानशीलता और उदारता से पूरा पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करता है न उसकी ओर से दी हुई सुविधाओं और अवसरों से लाभ उठाता है। अपना जीवन खेल कूद में व्यतीत करना और अपने ही भाइयों से लड़ाई-झगड़ा मोल लेना उसके चैन

और सुख का सामान है ! देखो, हिटलर जर्मन यहूदियों पर कैसे कैसे भयकर अत्याचार कर रहा है। देखो, मुसोलिनी ने किस निर्दयता से हब्श को हड़प कर लिया ! देखो, जापान ने किस बेदर्दी से चीन की नाक में दम कर रक्खा है। देखो, हिन्दुस्तान में हिन्दू मुसलिम समस्या कितनी हृदय वेधक बनी हुई है। देखो, धनवान निर्धनों पर कैसे कैसे अत्याचार कर रहे हैं और एक शक्तिशाली राष्ट्र दूसरे निर्बल राष्ट्र को निगलने की चिन्ता में है। मजदूर हड़ताल कर रहे हैं, व्यापारी सोने चाँदी से घर भर रहे हैं। पर आश्चर्य की बात है कि कोई भी दयालु प्रकृति से शिक्षा लेने के लिए तैयार नहीं है।

ओ मनुष्य ! तू वृक्षों और पशुओं ही से पाठ ले ! तू जानता है कि एक फूल दूसरे फूल से लड़ाई करना पसन्द नहीं करता। एक शिकरा दूसरे शिकरे का शिकार नहीं करता। एक शेर दूसरे शेर पर आक्रमण नहीं करता। तो फिर बतला तेरी बुद्धि को क्या साँप सूँघ गया कि अपने ही भाइयों को हड़प करने के नीच कार्य को ही अपने जीवन का कर्तव्य

बना रक्खा है ? क्या तू अब भी अपने व्यवहार में सुधार करने के लिए तैयार न होगा और गन्दे वातावरण को उत्तम वायुमंडल में परिवर्तित करके सुख और शान्ति का राज्य स्थापित न करेगा ?

सब खेलों से उत्तम और निराला खेल

हमारे शहर में एक हाई स्कूल था। शहर के धनवानों और निर्धनों के बच्चे विद्या प्राप्ति के लिए वहाँ ही जाया करते थे। स्कूल के हेडमास्टर साहब बड़े सज्जन और अच्छे स्वभाव के थे। स्कूल में बच्चों की शिक्षा के अतिरिक्त व्यायाम का भी उचित प्रबन्ध था। अतः प्रत्येक विद्यार्थी का, बिना भेदभाव, किसी न किसी खेल में भाग लेना आवश्यक था। स्कूल हमारे घर से बहुत समीप था। मैं भी इस नियम के पालन में शाम को स्कूल जाया करता था। मेरा रुझान क्रिकेट की ओर था, और मैं क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ियों में गिना जाता था। हेडमास्टर साहब खेलों मे बड़ी दिलचस्पी लेते थे और दूसरे कारणों के अतिरिक्त मेरे अच्छे खिलाडी होने की वजह से अक्सर मुझ पर अपना स्नेह और प्रेम

प्रकट किया करते थे और कभी कभी दैनिक उपयोग की वस्तुएँ इनाम में दिया करते थे। देखनेवाले भी अक्सर मेरा खेल देख कर प्रशंसा करने लगते थे। यह सब कुछ था फिर भी मैं असन्तुष्ट-सा रहता था।

शुक्रवार का दिन था, आकाश पर अचानक बादल छा गये। हेड मास्टर साहब ने सारे विद्यार्थियों को खेलने की छुट्टी दे दी। मैं अभी खेल ही रहा था कि एक दम कई प्रकार के विचारों में डूब गया और सोचने लगा, यह दुनिया भी करीब क़रीब खेल के एक मैदान के समान है। साधु सन्त और बुद्धिमान् जनों ने इसे कर्म-क्षेत्र के नाम से पुकारा है। फिर हृदय ने कहा— जो मनुष्य इस कर्म-भूमि में अपने कर्तव्य जी जान से पिल कर पूरे करता होगा, उसके बदले में मालिक उसे अमूल्य पुरस्कार देता होगा। एक क्षण बाद फिर विचार आया कि दुनिया के लोग तो एक बड़े ही ओछे और अमानुषिक खेल के खेलने में मग्न हैं क्योंकि अधिकांश मनुष्य अपने भाइयों पर अत्याचार करके और दूसरों के मुख का मास

छीन कर अपने और अपनी संतान और आश्रितो के पेट भरने और तन ढकने का प्रबन्ध करते हैं, और कोई-कोई समझदार व्यक्ति अपने भाइयों के लिए सर्वसाधारण के उपकार के साधन काम मे लाते हैं। जैसे, कोई सराय बनवाता है, कोई कुआँ खुदवाता है, कोई तालाब बनवाता है, कोई मन्दिर या मस्जिद बनवाता है, आदि। लेकिन मेरे लिए इनमें भी रत्ती भर सुख और आराम का सामान न था और न ही इनमे मेरे लिए कोई आकर्षण था।

खेल समाप्त हो गया और मैं घर चला गया, लेकिन इन्हीं विचारों मे लीन था। बड़ी गूढ़ और पेचीदा समस्या थी। सोच-विचार करते करते हृदय और मस्तिष्क थक चुके थे कि मालिक की दया से एकदम हृदय में एक लहर-सी उठी और यह विचार उत्पन्न हुआ कि देखो, ऐसा जान पड़ता है कि कृपालु प्रकृति ने मनुष्य मात्र को रास्ता दिखाने के लिए समय समय पर उच्च कोटि की आत्माओं को भेजा है। राम, कृष्ण, हाफिज, मुईनुद्दीन चिश्ती, तुलसी, नानक, कबीर वगैरह साध, संत, औलिया,

इन्हीं ऊँची आत्माओं में गिने जाते हैं। वर्तमान समय में भी उदार प्रकृति ने इस दैवी सिद्धान्त को क्रियात्मक रूप देने के लिए अवश्य कोई ऊँची और महान् आत्मा नियुक्त की होगी। बस, उसके साथ खेलना, उसकी सेवा करना, उसके साथ सच्चे प्रेम का नाता जोड़ना ही सबसे श्रेष्ठ और निराला खेल हो सकता है और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करना ही सबसे बढ़कर इनाम पाना है।

मैंने उसी क्षण पक्का निश्चय कर लिया कि बस, मेरे जीवन का लक्ष्य यही है और जब तक मेरी मनोकामना पूरी न होगी चैन की नींद न सोऊँगा। कृपालु प्रकृति की दया जोश में आई हुई थी, उसने शीघ्र ही मुझे सच्चे सतगुरु से मिला दिया और मैं उनके साथ आध्यात्मिक प्रेम का नाता जोड़ने में सफल हुआ। उनकी सेवा करके उनकी प्रसन्नता प्राप्त की और उनसे अमूल्य पुरस्कार पाकर अपनी तड़प और बेकली दूर कर सका। यह इनाम हेडमास्टर साहब के इनाम से कहीं ऊँचा और बढ़कर है। अब मैं बहुत प्रसन्न रहता हूँ। यह खेल अत्यन्त

सुखद और मनोरंजक खेल है । निस्सन्देह यह थोड़ा बहुत भयपूर्ण है लेकिन सतगुरु की दया मेहर से सारी काँटेदाली झाड़ियाँ साफ हो जाती हैं और मनुष्य आध्यात्मिकता की ऊँची से ऊँची मंज़िलों में प्रवेश करने के योग्य बन जाता है ।

हर्ष और कृतज्ञता के आँसू

अहा ! मेरा साम्राज्य कितना विशाल है । वह संसार की सारी लम्बाई चौड़ाई मे विस्तार की भाँति फैला हुआ है । उसमे प्रकृति की विचित्रताओं के असंख्य प्रदेश सम्मिलित हैं । कहीं अकूल सरिताएँ हैं, जिनमें गगनचुम्बी तरंगें तूफान उठा रहीं हैं, कहीं सुनसान मरुस्थल आंचल पसारे भयानक नीरवता में बाट जोह रहे हैं ।

× × × ×

कहीं मनोरम हरियालियाँ हैं, सुन्दर फूलों और वृक्षों से भरी वादियाँ हैं, जहाँ बहार की हृदय को गुदगुदाने वाली हवाएँ अंगड़ाइयाँ ले रही हैं । लहलहाते, कोमल और सुकुमार पौदे हृदय पर तन्मयता छाये दे रहे हैं । पेड़ों के पत्तों की सरसराहट सन्नाटे को चीरती हुई प्रशान्त वायुमण्डल में हलका सा राग भरे

दे रही है, जहाँ कुमरियाँ कूकती हैं, बुलबुलें चहकती हैं, जहाँ फूल और फल के सुन्दर रूप रंग, चाँदनी और तारों भरी रातें, मस्त घटाएँ और नन्हीं नन्ही बुँदियाँ मेरी हृदय-वीणा के तारों को झंकृत कर देती हैं। मैं उल्लास के आवेग से तडप उठता हूँ!

× × × ×

स्थान स्थान पर झरने बह रहे हैं, सरिताएँ, नदी नाले मस्ती की दशा में झूमते चले जा रहे हैं। गगनचुम्बी पर्वत झाड़ियों और घने वनों में अञ्चल छिपाये खड़े हैं। कहीं छोटी छोटी बस्तियाँ हैं, क़स्बे हैं और कहीं बड़े बड़े सुन्दर नगर बसे हुए हैं!

× × × ×

मैं इस साम्राज्य का एकछत्र शासक हूँ। मेरी आज्ञाएँ अटल, मेरे निश्चय सुदृढ़ और अविचल। मेरे अधिकार असीमित। मैं चाहता हूँ तो जंगल में मंगल कर देता हूँ, उपवनों को हराभरा कर देता हूँ और निर्जन स्थानों को बसा देता हूँ। मेरे कोप से पर्वत थर्राते हैं, सरिताएँ काँपती हैं। पशु और पक्षी, पहाड़ और नदियाँ, हवा और पानी सब मेरे अधीन हैं।

हाँ! यह सब कुछ है परन्तु हर्ष और शोक,

मृत्यु और जीवन मुझ पर शासन करते हैं। यहाँ भूचाल आते हैं, युद्ध होते हैं, झगड़े होते हैं, बीमारियाँ आती हैं, मौतें होती है। हाँ देख, सहस्रों मालिक के प्यारे आये दिन इस पृथ्वी के नीचे दबा दिये जाते हैं, सहस्रों को आग को आहुति बनाया जाता है। मनुष्य मनुष्य के काम नहीं आता। यह धन संपत्ति के द्वार पर माथा रगड़ता है, यह मनुष्यता और सज्जनता को मान बड़ाई की बलिवेदी पर चढ़ा देता है और विषय वासनाओं की आग बुझाने के लिए दूसरो के रक्त का प्यासा बन जाता है।

× × × ×

यहाँ वफ़ा नहीं, अमरत्व नहीं, शान्ति नहीं, सुख नहीं। प्रकृति की अगाध शक्ति के सामने मेरे अधिकार सीमित है! कितना मेरा राज्य! क्या मेरा सामर्थ्य और क्या मेरा व्यक्तित्व! हाँ देख, यह पृथ्वी सूर्य भगवान मे कहीं छोटी है और सूर्य भगवान की पिंड लोक में क्या गिनती! और ब्रह्मांड की तुलना में पिंड लोक राई के दाने मे अधिक महत्व नहीं रखता।

× × × ×

हाँ, देख इस रचना में असख्य ब्रह्माड हैं जो निर्मल चेतन देश के सामने, जहाँ सर्व-कर्त्ता परम तेजस्वी प्रभु के गुण प्रकाशमान है, कुछ महत्व नहीं रखते ! बस, ऐ रसना ! तू उस दयानिधि परम प्रभु के गुण गाती रह । ऐ आँख ! तू हर्ष और कृतज्ञता के आँसू बहाती रह—अन्तिम क्षण तक—कि मृत्यु की नीरवता तुझ पर छा जाय !

ओ अचेत यात्री !

दुनियाए फानी दोस्त यह, जिन्दगी यहाँ की चन्द रोज़।
है तू मुसाफिर चन्द रोज़, राहे अदम दर पेश है।

सवेरे का समय है। घडी ने पॉच बजा दिये हैं और मैं अपने नियम के अनुसार सैर के लिए बाग में जा रहा हूँ। पक्षी चहचहा रहे हैं, फूल प्रसन्न और खिले हुए हैं। पेड अधिकता से कारबन डाईऑक्साइड पीने में लगे हुए हैं और ओक्सीजन गैस छोड़ रहे हैं जिससे कि मनुष्य तरावट और ताजगी प्राप्त करे। फूल और कलियाँ अपनी अपनी जगह बहार दिखला रही हैं और प्रसन्न हैं कि वे मनुष्य के लिए प्रसन्नता और मनोरंजन का सामान जुटा रही हैं। देखिये, कैसा सुहावना समय है! हर एक वस्तु अपने अपने कर्त्तव्य पूरे करने की चिन्ता में है। रह रह कर ध्यान

आता है कि उदार प्रकृति ने इस सुन्दर समय के लिए मनुष्य के जिम्मे भी अवश्य कोई महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य निश्चित किया है, किन्तु आह ! यह मनुष्य है कि बेखबरी और बेहोशी की नींद सोया है या केवल अपनी दुनियवी आवश्यकताएँ पूरी करके उनका स्वाद लेने में मग्न है । जी कहता है कि जब कि फल फूल, पेड़ पौदे मनुष्य की सेवा में जी जान से लगे हैं तो ओ मनुष्य, तुझे केवल खाना पीना और मजे उड़ाना शोभा नहीं देता । उठ, बहुत सो चुका, कूच का समय समीप है, मंजिल बहुत दूर है । उठ उठ, यह मोह की नींद छोड़ और अपने भगवन्त की याद में लग । इस समय उसकी दया जोश में आई हुई है । जरा अपनी आँखें बन्द कर और उस प्यारे यार को अपने अन्तर में पुकार और सुन सत्य की धुन को और फिर देख अपने प्रीतम का जलवा !

हाँ, इस संसार में आकर पेट भर लेना और शरीर को जीवित रखना ही तेरा कर्त्तव्य नहीं है, या जानवरों की तरह सन्तान पैदा करना तेरा उद्देश्य नहीं है । तू चेतन है, चेतना ही से बना है और मालिक की याद और उसके बच्चों की सेवा

तेरा पहला कर्त्तव्य है। देख, इस रचना का कण कण कृपालु प्रकृति के आज्ञा-पालन में जी जान से लगा हुआ है। इनसे शिक्षा ले और अपना जीवन सुधारने का प्रयत्न कर नहीं तो, याद रख, यह दुर्लभ अवसर व्यर्थ नष्ट हो जायगा और रोने पछताने के सिवा तेरे हाथ कुछ न आयेगा। क्या तूने यह शेर नहीं सुना—

दुनियाए फानी दोस्त यह, जिन्दगी यहाँ की चन्द रोज।
है तू मुसाफिर चन्द रोज, राहे अदम दर पेश है।

तेरा हर एक क्षण, तेरी हर घड़ी मालिक की याद और सेवा में बीतनी चाहिए। निस्सन्देह तुझे खाने-पीने और पहनने की आवश्यकता है। लेकिन तू तो सीमा से कहीं आगे बढ़ रहा है और जब कृपालु प्रकृति तुझे सचाई के रास्ते पर लाने का प्रयत्न करती है तो तू तिलमिलाने लगता है। देख, उदार प्रकृति ने तुझे बुद्धि दी है और सूक्ष्म अनुभव शक्तियाँ प्रदान की हैं जिन्हें उचित रूप से, साधन करके जगाने से तू कुल मालिक से मिल सकता है। बस आवश्यक है कि आज से तेरे जीवन का हर

एक क्षण, हर घड़ी उस पवित्र परम पिता की याद में बीते और तू इस नाशमान् संसार में एक मुसाफिर के समान रहने का प्रयत्न कर, इसी में तेरा कल्याण है, तेरी मुक्ति है, तेरा भला है !

बस एक अभिलाषा !

आह ! मेरे हृदय का संसार सूना और उजाड़ हो चुका है·········सारी सम्पत्ति नष्ट हो चुकी है·······मैं दीवानी हूँ···········मेरा शरीर आग की लपटों की भाँति भड़क रहा है···········घटाटोप········अन्धकार भरी आँधियाँ चल रही हैं···········बिजली चमक रही है···········पानी बरस रहा है···········और मैं दिये की लौ की तरह घुल रही हूँ···········मेरी रुचियों पर पानी पड़ चुका है···········यह है वह अँधेरा, निराशा पूर्ण वायु मण्डल जिसमें जीवन बिता रही हूँ···········मैं इस तूफ़ान को अपने दुर्बल हाथों से थामने का प्रयत्न कर रही हूँ···········और उधर संसार ने मेरे स्वागत के लिए एक भीषण नश्तर तैयार कर रक्खा है ।

× × × ×

पर तुम हँसोगे—उपहास करोगे कि भला मैं चाहती क्या हूँ। कुछ नहीं—केवल पूजा, और निष्काम पूजा—मैं चाहती हूँ कि जैसे सहजोबाई ने अपने प्रियतम के वियोग में संसार को त्याग कर अपने जीवन को एक 'अमर राग' में परिवर्तित कर लिया—जिस प्रकार ताहिरा ने अपने भगवन्त के सम्मुख अपना जीवन आराधना मे बिता दिया, मैं भी वैसे ही तुम्हारी पूजा मे लग जाऊँ और अपने जीवन को इस निर्मल आध्यात्मिक तन्मयता मे खो दूँ ।

× × × ×

निस्संदेह प्रेम एक पवित्र और विशुद्ध भाव है तो एक भयपूर्ण दुर्गम घाटी भी ‥ ‥ जिसमे‥ ‥ यदि एक ओर रंग रंग के सुन्दर फूल खिलते हैं तो दूसरी ओर ‥ ‥ बड़े बड़े पैने काँटे—जिनमे से सकुशल निकल जाना बडा ही कठिन है।

× × × ×

पर आह ! यह वासनाओं का पुजारी मनुष्य क्या जाने कि मुझे तेरे इस सरल सौन्दर्य मे किस ज्योति की मुस्कान जगमगाती दीख पडती है ! यह ईर्ष्यामय

और अत्याचारी संसार तो निन्दा और अपमान करना ही जानता है। भोले भाले और निरपराध को सताना उसकी प्रकृति · · · · · घावों पर मरहम रखने के बदले नमक छिड़कना उसका उद्देश्य ······किसी की आशाओं और आकांक्षाओं का खून करना उसके लिए एक सुख का साधन !

× × × ×

मैंने भरसक सभी प्रयत्न किये कि इस पवित्र और निष्काम प्रेम-भाव की प्रगति में किसी प्रकार की बाधा न हो, किन्तु आह ! मेरी भावनाएँ पैरों तले रौंद डाली गई, मेरी आकांक्षाओं और लालसाओं को मसल डाला गया। आह! यदि वे जान सकते कि तेरी मनमोहिनी मूर्ति में मैं किसकी झाँकी की आशा लगाये बैठी हूँ !

× × × ×

आह ! तुम नहीं जानते कि जब तुम अपनी सुन्दर आँखों को अपनी घनी पलकों के आवरण में छिपा लेते हो तो तुम्हारे मोहन रूप की झलक—आह ! बस वही एक झलक · ······मुझे मदमस्त बना

देने के लिए पर्याप्त है·· ·· पर तुम उदासीनता क साथ मुँह फेर लेते हो· तुम्हे ध्यान तक नहीं आता कि एक व्याकुल और घायल हृदय तुम्हारे चरणों में गिरने के लिए कितना आतुर और बेचैन है ······में देखती हूँ·· और· मरती हूँ·· तुम जानते हो ··और · मौन रहते हो।

प्यारे का नाम होठों पर प्यारे का नूर अन्तर में

इतवार का दिन था। दफ्तरों में छुट्टी थी। लगभग सभी कर्मचारी अपने थके मांदे शरीर को आराम देने की चिन्ता में थे। पर मुझे सृष्टिकर्ता की कारीगरी और प्रकाश देखने की लालसा बेचैन किये हुए थी। मैं उठा, छड़ी हाथ में ली और जंगल की ओर निकल गया। कुछ मील की यात्रा तय करने पर पानी का एक झरना दीख पड़ा। झरने के पास एक सुन्दर बाग़ था। बाग़ में आम, जामुन और दूसरे फलदार पेड़ लगे थे। मैंने अपनी दृष्टि एक बड़े से आम के पेड़ की ओर डाली। पेड़ फलों के बोझ से झुका जाता था। छायादार था। मैंने सुन रक्खा था कि पेड़ों में भी अनुभव-शक्ति होती है और वे थोड़ा बहुत दुःख-सुख का ज्ञान ले सकते हैं। और विज्ञान की नयी खोजों और प्रयोगों

में यह सचाई पूर्णतया सिद्ध हो गई है। अस्तु, मैंने कुछ बालटियाँ पानी भर कर पेड़ की जड़ में डालीं और कुछ क्षणों बाद उस पेड़ के नीचे चुपचाप बैठ गया। पेड़ झूमने लगा, मानों उसने मेरे उपकार पर कृतज्ञता प्रकट की और कुछ मिनटों बाद मुझसे बोला और एक खास ढंग से पूछा—

"कहिए क्या हाल है"

मैंने नम्र स्वर मे उत्तर दिया—"धन्यवाद है उस जगत् पिता का। भाई. दुनिया दुःख क्लेश का घर है। यह कह कर एक दम मेरे मुँह से यह शेर निकला—

"यह देखा दुनिया का हाल हमने,
न सुख यहाँ है न चैन राहत।
रंजो अलम की बनी है दुनिया,
हसदो रक़ाबत यहाँ है गायत।"

पेड़ ने तुरन्त ही मुस्कराकर उत्तर दिया—"क्या तूने यह शेर नहीं सुना—

"पड़ा था एक दिन निढाल सोया,
कि हल हुआ यह मुअम्मा मेरा।

बस आया मुजदाए जाँफिज़ा फिर,
पोशीदा इनमें है दस्ते रहमत ।"

और यह शेर पढ़ने के बाद अपनी रामकहानी सुनानी आरम्भ कर दी । कहने लगा—

"बीस बरस हुए मेरा जन्म जब हुआ था । मालिक की दया से जब मैंने होश सम्हाला तो मैंने देखा कि चन्द लड़के हर रोज मेरे नन्हें नन्हे पत्ते तोड़ लेते, पर दयालु प्रकृति का कृपापूर्ण हाथ बराबर मुझ पर बना रहा और मैं दिन दिन बढ़ता गया । कुछ वर्ष योंही बीत गये और मैं एक जवान पेड़ बन गया और मुझ में मीठे फल लगने आरम्भ हो गये । बस, फिर क्या था, मनुष्य था, मनुष्य ने निर्दयता से मुझ पर ढेले चलाने आरम्भ कर दिये और कोई कोई मन चले तो मुझ पर सवार हो गये और लगे फल तोड़ने । पर आप सुन कर प्रसन्न और चकित होंगे कि मैंने कभी उफ तक न की। मुझे पूरा विश्वास था कि मेरा जीवन मनुष्य की सेवा के लिए ही है । और इस ऊपरी कठोरता और अत्याचार के सहने में ही मेरा कल्याण है क्योंकि इस से मेरा लक्ष्य समीप आता जाता है । मुझे यह भी निश्चय

है कि मेरे संगी साथियों को भी देर अबेर इसी परिस्थिति से गुजरना होगा। पर चूकि मैं इन सब मे बडा हूँ और प्रकृति का भेद मेरी समझ में आ गया है इसलिए मैं सन्तुष्ट हूँ, मुझे कोई शिकायत नहीं। मैंने जीवन की दुर्गम मंजिलें तय कर ली हैं और सम्भवत यह फल देने का मेरा अन्तिम वर्ष है। इसके पश्चात् मेरी नस नाडियों मे शक्ति न रहेगी और लकडहारा मुझे काट कर पृथ्वी पर फेंक देगा। उसके पश्चात मुझसे ईंधन का काम लिया जायगा और मैं कुछ ही मिनटों बाद राख बन कर मनुष्य के चरणों का चूमा करूँगा। अपना अस्तित्व मिटा कर आपे का पर्दा दूर करके मनुष्य के पैरों की धूल बनना ही मेरा आदर्श है और यही मेरे जीवन का लक्ष्य है।"

पेड के ये शब्द सुन कर मैं आश्चर्य में पड गया और मुझ पर बेसुधी की दशा छा गई। पेड और त्याग एवं नम्रता का यह आदर्श! पेड और समझ बूझ तथा कर्तव्य का यह ज्ञान! उठ, तुझे भी अपना आपा मिटाकर, अहकार का पर्दा दूर करके अपने से अधिक चेतन व्यक्तित्व के चरणों की धूल बनना होगा। यही तेरा लक्ष्य है और यही

तेरा उद्देश्य ! मैंने अज्ञानता और निराशा को परे फेंक दिया, साहस को साथ लिया और बड़ी नम्रता और दीनता से पेड़ की बहुमूल्य शिक्षा को क्रियात्मक रूप रूप देने में जी जान से जुट गया और अन्त मे अपने प्रीतम की दया मेहर मे अपना अस्तित्व मिटा कर, आपा दूर करके, अपने आपको उस परम प्रियतम के चरणों की धूल बना डाला। अब होंठों पर प्यारे का नाम है, हृदय में यार की तसवीर है और जिधर देखता हूँ प्यारे की बनाई हुई प्यारी प्यारी चीजों मे उसका नूर नजर आता है। लोग दुनिया को भयानक और दुःखपूर्ण बताते हैं। मैं भी उसी दुनिया में रहता हूँ। दुःखों और विपत्तियों के झकोले आते हैं पर मेरा धैर्य तनिक भी नहीं विचलित होता। प्यारे का नाम होंठों पर, प्यारे का नूर अन्तर में, प्यारे की तसवीर आँखों के सामने ! मैं प्रति क्षण प्रसन्न रहता हूँ और प्यारे के गुणानुवाद गाता हूँ—इसी दुनिया में जहाँ लोग दुःख दर्द से मरे जाते हैं !

आओ प्रीतम फिर मेरे घर

बहार आ गई है। अपने साथ सुन्दर रंगों और सुवासों की एक दुनिया लाई है। फूलों पर यौवन, कलियों पर जवानी छाई हुई है। बहार की देवी रंग-बिरंगे फूलों की सभा में बड़े सज-धज से नाच रही है। जिधर देखो यौवन, उल्लास, मस्ती, मदहोशी, मादकता! वह देखो, पेड़ों की डाल-डाल, पात-पात दीवाना होकर झूम रहा है। बुलबुल के प्रेम में रँगे राग सुन कर फूल फूले नहीं समाते। पपीहे की 'पी कहाँ' और कोयल की दर्द भरी कूक हवा में, आकाश में गूंज रही हैं। प्रकृति का कण-कण सुख और उल्लास का मुँह बोलता चित्र है।

× × × ×

पर प्रियतम! मेरा हृदय बहार की यह रंगीनी और मनोहरता देख कर भी सुखी नहीं है। आँखें

मुझे ढूँढ़ रही हैं। भावनाओं का एक तूफ़ान उमड़ा हुआ है। कसकें उठ रही हैं, दर्दभरी अनुभूतियाँ उभर रही हैं, लालसाएँ करवट बदल रही हैं। बड़ी बेचैनी और व्याकुलता है। धीरज और सहन का सामर्थ्य हाथ से जाता रहा है।

× × × ×

मैं तेरी याद में तड़पा करूँ और तू, प्रीतम! मेरी तपन न बुझाये! मेरे व्याकुल हृदय को शान्ति न दे! घावों पर सान्त्वना का मरहम न रक्खे! नहीं नहीं, तू तो मेरे मन-मन्दिर का देवता है, अपने भक्तों की सुनता है, पग-पग पर उनकी रक्षा करता है, उनके निर्बल हृदय का सहारा बनता है। तो फिर मेरे प्रीतम, मेरे दिल की गहराइयों में उतर जा और राग बन कर छा जा, अपने बेपर्दा प्रकाश से मस्त और दीवाना बनादे और अपनी रंगीन और जादूभरी मुस्कान के पवित्र सागर में मुझे विलीन कर दे।

× × × ×

हाँ, प्रीतम! मुझे याद है कि जब बहार की ऋतु अपने जोबन पर थी, रंग विरंगे सुन्दर फूल खिले हुए थे, चन्द्रमा की चाँदनी और तारों की झिलमिलाहट

में फूलों की मनोहरता हृदय और मस्तिष्क पर न मिटने वाले चित्र बना रही थी, रात की धीमी धीमी हवा फूलों से सुगन्ध चुरा कर चुपचाप बढ़ी जा रही थी कि तुम, हाँ प्रीतम तुम, सौन्दर्य और शृङ्गार की ही मूर्ति बन कर आये और तुमने मुझे प्रेम के गीत, दर्दभरे राग और प्रेम भरी बातें सुनाईं। प्रीतम, आओ फिर मेरे घर।

होली खेलो, होली खेलो

जुनूनाबाद एक अच्छी भली रियासत थी। मस्त-पुर राजधानी था और रियासत भर में सबसे अधिक सुन्दर, बड़ा और रौनक वाला शहर था। बड़ी चहल पहल रहती थी। आबादी लगभग सत्रह हजार पुरुष और स्त्रियों की थी। अधिकतर लोग काली के पुजारी थे और सवेरे शाम अपनी अनेक सांसारिक वासनाएँ पूरी कराने के लिए तरह तरह की भेंट चढ़ाते थे। चारों ओर आनन्द मंगल का राज्य था। बीमारी आदि कष्टों का नाम तक न सुना था।

सरशारनाथ पहुँचा हुआ साधू था। शहर में कुछ फर्लांग की दूरी पर डेरा डाल रक्खा था। हर समय मालिक की याद में रत, संसार से निर्लिप्त और बेपरवाह, मालिक के प्रेम में रंगा रहता था। शरीर नंगा रखता था। केवल एक लगोटी

और चादर में जीवन बिताता था और आठ पहर में एक बार खाना खाता था और सन्तुष्ट रहता था। शहर के निवासी अक्सर उसकी यह निराली दशा देख कर हँसा करते, लेकिन रियासत के कुछएक बड़े बड़े अमीर और अधिकारी कभी कभी उसके यहाँ उपस्थित हुआ करते और छिपे तौर पर उसकी वास्तविकता जानने का प्रयत्न करते। पर सरशारनाथ उनकी अधिक परवाह न करता और केवल एक दो शब्दों मे बात चीत का सिलसिला बन्द करके अपना पीछा छुड़ाने का प्रयत्न करता और सदैव "होली खेलो, होली खेलो" की रट लगाया करता यहाँ तक कि शहर के लोगों ने उसका नाम ही "होली वाला" रख दिया।

सप्ताह, महीने और साल इसी तरह बीत गये और सरशारनाथ की वास्तविकता का पता किसी को न चला। लोग उसे दीवाना और पागल समझ कर उसकी ओर ध्यान न देते थे। गरमी की ऋतु थी। उस साल वर्षा की कमी थी। फसलें नष्ट हो चुकी थीं। शहर में बीमारी ने आफत कर रक्खी थी। अकाल पड़ने के कारण भूखों मरने की नौबत आ गई।

मनुष्य और पशु मरने लगे। शहर की आबादी में बहुत कुछ कमी हो गई और चारों ओर से निराश होकर शहर के प्रमुख लोगों का ध्यान सरशारनाथ की ओर गया। सरशारनाथ ने पहले की तरह केवल एक दो शब्द कह कर अपना पीछा छुड़ाने का प्रयत्न किया और "होली खेलो, होली खेलो" के गीत अलापने लगा। शहर के माननीय व्यक्तियों ने अपनी दर्द भरी कहानी सुनाई और विशेष नम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि हम लोग असाधारण विपत्ति के पंजे में फँसे हैं और आप "होली खेलो, होली खेलो" की रट लगा रहे हैं। आखिर इस 'होली खेलो, होली खेलो' का अर्थ और महत्व (Significance and Importance) क्या है। सरशारनाथ मुस्कराने लगा। कोमल स्वर में उत्तर दिया "मेरे प्यारो! घबराहट और चिन्ता क्यों और किस लिए? अगर वह मालिक आप से असली अर्थों में होली खेलना चाहता है तो आपको प्रसन्नतापूर्वक अपने भगवन्त से होली खेलनी चाहिए।

क्या आप लोग नहीं जानते कि होली का मौसम कितना प्रिय और आनन्दमय होता है। सभी मनुष्य मारे प्रसन्नता के फूले नहीं समाते और अपने मित्रों

और सम्बन्धियों पर रंग और गुलाल फेंकने मे संलग्न हो जाते हैं। कुलमालिक भी इसी प्रकार सब जीवों के लिए एक ऐसी ऋतु लाना चाहता है जिसमें संसार के लोग दुनिया के झगड़ों झमेलों से अपने को न्यारा और स्वतंत्र अनुभव करें। इसलिए उसने आपको होली खेलने का अद्भुत अवसर प्रदान किया है। आप जरा मेरी ओर देखिए। मैंने अपने जीवन को किस प्रकार परिस्थितियों के साँचे में ढाल लिया है। परिणाम यह है कि अब संसार की ऊँच नीच दशाएँ मुझ पर जरा भी असर नहीं कर सकतीं और मैं प्रति क्षण, हर घड़ी अपने भगवन्त के साथ होली खेलने में संलग्न हूँ। इसलिए वर्तमान दशाओं में आपके लिए भी यही उचित और बढ़कर होगा कि अपने चारों ओर की दशाओं और घटनाओं के साथ मेल करने का प्रयत्न करें और संसार के दुःखों और कठिनाइयों का वीरतापूर्वक सामना करें और उस पवित्र दिन की प्रतीक्षा करें जब वह जगत् पिता कुल मालिक आप सबके साथ सचमुच की होली खेलने की मौज रचेंगे।

सरशारनाथ की यह शिक्षा अधिकारियों के दिलों

मे घर कर गई । उन्होंने उसे धन्यवाद दिया और शहर को लौटे और लोगों की रक्षा के लिए सभी उपाय काम में लाये और देखा कि कुल मालिक की दया से थोड़े ही दिनों में विपत्ति के बादल दूर हो गये और लोगो का ध्यान सरशारनाथ की ओर खिंच गया । अब वह पुराने विचार और रस्में छोड़ कर अपने प्रीतम के चरणों मे अनन्य भक्ति का नाता जोड़ने का प्रयत्न करने लगे और असली होली का आनन्द लेने लगे ।

सचमुच जगत् पिता कुल मालिक को अपने बच्चों के साथ होली खेलना है और वह [illegible] हर घड़ी अपने बच्चों को होली खेलने [illegible] बना रहा है ।

मेरे दिल की दुनिया

एकान्त था, सन्नाटा छाया हुआ था, शान्ति थी और मैं बेसुध, टूटा सा हृदय लिये, दुःख से निढाल बाग के कोने में घास पर बैठा था—किसी विचार में लीन, दुनिया से एकदम बेसुध, सोच रहा था। सोच रहा था—बीती घटनाएँ, वे मधुर घड़ियाँ, वे मनोरम मुस्कानें, आह! वे हृदय को लूटने वाली अदाएँ। सोच रहा था कि यही बाग था, यही जगह थी और...
मैं इसी भाँति किसी विचार में खोया हुआ था कि ऐ साजन, तुम आये और तुम्हारे पदार्पण ने मुझे चौंका दिया!

× × × ×

तुम्हारी आँखें मेरी आँखों से चार हुईं और ... तुम छिप गये। मन की मन ही में रह गई! अभिलाषाएँ रह रह कर तड़पीं और तड़प कर ठण्डी हो

गईं— पर तुम छिप गये ! जगमगाते रूप की अग्निवर्षा से दिल की बस्ती जला कर, बुद्धि और चेतना की सम्पत्तियाँ चुरा कर, सुख और शान्ति को पैरों से मसल कर, मेरे प्रियतम ! अब यह परदा ! आह ! तुम क्या जानो किसी घायल हृदय की अतृप्त लालसाओं-भरी तड़प ! उसने तो अपने जीवन की अन्तिम साँस तक तुम्हारे प्रेम की भेंट कर दी है—उसकी प्रत्येक साँस तुम्हारी है, प्रियतम !

× × × ×

आह ! यह अधीरता, व्याकुलता ! मेरा हृदय सीने मे अशान्त रहता है, बेचैन—बहुत बेचैन ! जब ऊषा की लाली दीखने लगती है और सूरज की सुनहरी किरणें निकल आती हैं, मीठे स्वर वाले पक्षी प्रेम के गीत गाते हैं, गुणगान के राग अलापते हैं, बुलबुल डाल पर बैठी किसी की याद में दर्द भरा गीत गाती है, कुमरी कू कू करती है,'नन्हीं नन्हीं कलियाँ सबेरे की हवा के झोंकों से एक दूसरे का मुँह चूमती हैं, कभी प्यार से आपस में गले मिल जाती हैं, हवा में, आकाश में एक सुखद हिलोर उत्पन्न हो जाती है, मेरा घायल हृदय तड़प उठता है, छाती की कसक भड़क

जाती है—तुझे न पाकर—मेरे प्रियतम ! और······ हृदय प्रेम के आँसू बन कर यही कहता है कि आह ! तुम मेरे सामने होते—मैं भी तुम्हें अपना दर्द-भरा गीत सुनाता !

× × × ×

और हाँ, जब तुम्हारी मीठी मीठी बातें याद आती हैं— बेसुध, अपने को भूला हुआ, प्रेम में खोया हुआ, एक ही विचार, एक ही भावना में लीन, पीड़ा और सन्ताप में डूबा हुआ, दुःख और दर्द का रूप, वियोग और विछोह की मूर्ति—मेरा हृदय मेरा मस्तिष्क एक दर्द-भरे राग को सुनने लगते हैं । मैं दुःख और पीड़ा के सागर में एकदम डूब जाता हूँ । आँखें आँसू बहाने लगती हैं । सीने मे दिल तड़पने लगता है । प्रेम की अगाध भावनाएँ अँगड़ाइयाँ लेने लगती हैं और कामनाओं आकांक्षाओं और लालसाओं की एक रंगीन दुनिया बस जाती है और जी यही चाहता है······ अधीरता की आतुरता और उमंग मे तड़प उठता है कि आह ! इस समय तुम होते— मेरे दिल की दुनिया को बसाने वाले !

व्यथित हृदय से

आह ! वासनाओं के पुजारी मनुष्य ! प्रेम के विरुद्ध तेरी यह आवाज नहीं नहीं'' विद्रोह !

तेरी आँखों से कभी कभी आँसुओं का टपक पड़ना मेरे समीप कोई मूल्य नहीं रखता, मैं समझता हूँ, एक प्रकार का छल यह भी है। किन्तु ओ दुराशी ! मैं तेरे हृदय को तोडना नहीं चाहता, मैं तो केवल आग को आग और पानी को पानी कहा चाहता हूँ। पर तू पानी को आग का रूप दे रहा है। भद्दे कछुए की धीमी चाल सुन्दर हिरन की तेज चाल से तो नहीं बदल सकती और— मक्खी पतिंगे की भाँति अपना जीवन दीपशिखा पर निछावर नहीं कर सकती।

× × × ×

देख, अनुराग या प्रेम मनुष्य जीवन के लिए जलता

हुआ दीपक है जिसके प्रकाश में सृष्टि का कण कण हृदयहारी और मनोरम दीख पड़ता है। संसार का प्रारम्भ प्रेम से हुआ, इसका अन्त भी प्रेम ही होगा।

× × + ×

प्रेम संसार की हरएक वस्तु में झलक रहा है। देख, ओ धूल के पुतले! सबेरे की वायु किसकी खोज में बहार बन कर मारी मारी फिरती है! फूलों की सुगन्ध किसके हृदय के घाव को सुवासित करने के लिए भटकती फिरती है? यदि तारों में तरावट है तो वनस्पतियों में ग्रहण करने की शक्ति है, पर्वतों के बर्फानी शिखर हृदयहारिता के चिन्ह हैं।

× × × ×

नन्हें नन्हें पक्षियों के जीवन भरे रागों में प्रेम के गीत हैं? ओ उलटी समझ वाले! प्रेम रचना की जान है। जरा अपनी परिस्थिति पर दृष्टि डाल"...... दाहिनी ओर, बाईं ओर ....नीचे, ऊपर ..प्रति दिशा, प्रति ओर ....प्रेम का प्रकाश काम करता हुआ दीख पड़ता है। प्रकृति का प्रत्येक कार्य प्रेम की गर्मी से चल रहा है। मतलब यह कि पृथ्वी और आकाश के प्रत्येक कण में प्रेम के गीतों की

गूँज है । अपनी दृष्टि को तनिक पसार कर देख, और रचना की इन खुली हुई वास्तविकताओं से दार्शनिकता की शिक्षा ले ।

प्रियवर ! यदि प्रेम में रस न होता, हृदय को हरने की योग्यता और मिलन का गुण न होता तो जीवन की कटुताएँ असह्य हो जातीं और मनुष्य मृत्यु की कामना में पत्थरों से सिर फोड़ लेता ।............ प्रेम की पीड़ाएँ भी शान्ति देने वाली हैं और—प्रेम की वे वे विभूतियाँ हैं जिनसे सुख और शान्ति के झरने फूटते हैं ।

× × × ×

प्रेम एक हरा भरा और मनोहर फूल है, और— हे मनुष्य ! यदि इसमें रंग और सुगन्ध न होती तो कोई भी भौंरा इसके पास न आता । क्या कभी किसी सूखे हुए फूल को किसी मूर्ख भौंरे ने अपना गीत सुनाया ? और किसी मुर्झाए हुए फूल के सामने किसी बुलबुल ने गीतों की पूजाञ्जलि चढ़ाई ?

× × × ×

प्यारे ! मुझे अपना वह वचन, कि मैं तुझे प्रत्येक आपत्ति से बचा कर सदैव की मुक्ति दिलाऊँगा, याद

है किन्तु तुझे सांसारिक आचार व्यवहार के इतने दिनों से लगे हुए भय ने और सत्य असत्य के भ्रमाने वाले ज्ञान ने धोखे में डाल रक्खा है। ये वे लोहे की जंजीरें हैं जिनमें जीवन की स्वतन्त्रता जकड़ी हुई है और तू जीवन के सबसे ऊँचे उद्देश्य की पूर्ति से विमुख है।

× × × ×

यदि तू स्वतन्त्रता के वायु-मण्डल में साँस लेना चाहता है तो इन गई बीती टेकों को छोड़ दे, सांसारिक अपमान और अपयश के भ्रमात्मक विचारों को त्याग कर प्रेम-साधना में लग जा। साहस और दृढ़ता से काम ले, और जब तेरा प्रेम मिलन-प्रतीक्षा के बीच राह की कठिनताओं को पार करके मिलन-मदिरा पी सकेगा, संसार की सारी विविधताए समाप्त हो जायँगी और इस रचना का एक एक कण सन्तुष्ट होकर किसी क्रांति-युग के लिए सतेज दीख पड़ेगा!

कांटे की सीख

शुक्रवार का दिन था। स्कूल में बारह बजे के बाद लड़कों का डेढ़ घण्टे की छुट्टी थी। मुसलमान विद्यार्थी नमाज पढ़ने चले गये और हमारे दर्जे के शेष विद्यार्थियों ने यह समय सैर और दिल बहलाव में बिताने का निश्चय किया। सभी विद्यार्थी नंगे पाँव जंगल की ओर निकल गये। जंगल हमारे स्कूल से लगभग चार फर्लांग की दूरी पर था और बेर के पेड़ों से अटा पड़ा था। बेर बड़े मीठे और स्वादिष्ट थे और प्रत्येक विद्यार्थी की यही इच्छा थी कि जल्द से जल्द पहुँच कर बिखरे हुए बेर इकट्ठा कर ले। मैं भी यही चाह लिये बड़ी तेजी से बेर के पेड़ों की ओर दौड़ा जा रहा था। लेकिन अभी आधी दूरी भी तय न की होगी कि अचानक एक बड़ा भारी काँटा मेरे पैर में चुभ गया और मेरे पैर से ख़ून

बहने लगा। मेरे कुछ साथियों ने उस कांटे को मेरे पैर से निकाला और एक रूमाल पानी में तर कर के घाव पर बांध दिया और जंगल की राह ली। मैं दुःख दर्द का मारा वहीं पर बैठ गया। पाँव उठाने से लाचार था मन ही मन काँटे के कड़वे स्वभाव और निर्दयतापूर्ण व्यवहार की शिकायत करने लगा। कांटा कुछ मिनट तो चुप रहा पर उसके बाद ऊँचे स्वर में मेरी ओर मुखातिब हुआ और कहने लगा—

"ओ भोले भाले! क्या तुझे प्रकृति के नियमों की रत्ती भर भी जानकारी नहीं है? और उस पर तुर्रा यह कि अपनी भूल और अपराध के लिए मुझे ही जिम्मेदार समझता है। मैंने तो केवल अपना कर्तव्य पालन किया है। देख, दयालु प्रकृति ने तुझे दो 'आँखें दी हैं, बुद्धि और समझ-बूझ दी है और तू है, कि इतनी लापरवाही और निर्दयता से अपना पैर मुझ पर रखता है और मुझे कुचलने का अनुचित प्रयत्न करता है। तेरे लिए यही उचित था कि फूँक फूँक कर पैर रखता और कृपालु प्रकृति की दी हुई आंखों का ठीक उपयोग करता। क्या तूने नहीं सुना—

'हर कसे रा बहरे कारे साख्तन्द'

प्रकृति के नियम किसी पर भी अत्याचार नहीं करते बल्कि, इस के विपरीत सांसारिक विपत्तियों में सदैव कुल मालिक की दया का हाथ छिपा रहता है और जो मनुष्य अपने कर्तव्यों के पालन में आलस और लापरवाही करता है उसे ठीक राह पर लाने का प्रयत्न किया जाता है। तू कृपालु प्रकृति के इस नियम को नहीं जानता या यों कहो कि परले दर्जे का ला परवाह है इसलिए विवश होकर तुझे यह पाठ पढाना पड़ा।"

काटे की यह युक्ति पूर्ण और प्रभावशाली सीख मेरे हृदय में उतर गई और मैं कुछ क्षणों के लिए चुप हो गया। थोडी देर बाद मैंने बड़े सम्मान के साथ पूछा कि यह तो बतलाइये कि सांसारिक विपत्तिया, दु:ख और कष्ट किस प्रकार मनुष्य को ठीक रास्ते पर लाने में अनुकूल और सहायक सिद्ध होते हैं। काटे ने कोमल स्वर में उत्तर दिया—ऐ भाई! देख, कृपालु प्रकृति ने तुझे दिमाग और ये आखें प्रदान कीं पर, इस कारण से कि तूने इनका अनुचित उपयोग किया, मैंने इस प्रकार तुझे उनके महत्व का ज्ञान कराया। इसी प्रकार उदार प्रकृति ने तुझे अन्तर्दृष्टि

और ऊंची आध्यात्मिक प्रज्ञा प्रदान की हैं पर चूंकि तू उनका ठीक उपयोग करने की परवाह नहीं करता इसलिए उसकी ओर से समय समय पर तुझ पर दुःख और विपत्तियां आती हैं जिससे तू उधर ध्यान दे। बस, इसी प्रकार सांसारिक विपत्तियां भी अन्तर्दृष्टि को जगाने में सहायक सिद्ध होती हैं और जब किसी मनुष्य की अन्तर्दृष्टि पूरी पूरी जाग्रत हो जाती है तो उसमें प्रकृति के नियमों का भेद समझने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है और वह उनमें स्पष्ट रूप से कुल मालिक की दया का हाथ देखता है। इसके अतिरिक्त ऊँचे आध्यात्मिक घाट की प्रज्ञा जागने पर वह प्रत्येक घटना को सांसारिक दृष्टिकोण के बदले दैवी दृष्टिकोण से देखने लगता है और हर बात में प्रसन्न रहता है और मालिक की इच्छा में बर्तता है और हर घड़ी अपने परम प्रियतम की महिमा के गीत गाता रहता है। इसलिए, ओ मनुष्य ! तुझे उचित है कि इस घटना से शिक्षा ले और इस सचाई को अपने मन में बसाने का प्रयत्न कर कि कृपालु प्रकृति के राज्य में दण्ड और पुरस्कार का नियम नहीं है बल्कि कुल मालिक की दया से भरे हुए नियम प्रत्येक मनुष्य को

अपनी उदारता और दानशीलता से लाभ पहुँचाने के लिए प्रतिक्षण तैयार रहते हैं और उनका यही प्रयत्न रहता है कि मनुष्य की सोई हुई आत्मिक शक्तियाँ जागें और उसमें ऊँचे आध्यात्मिक मण्डलों की प्रज्ञा उत्पन्न हो। सचमुच यह नेमत प्राप्त होते ही मनुष्य का जीवन वास्तव में आनन्दमय और सुखपूर्ण बन जाता है और वह चौबीस घण्टे आठों पहर अपने प्रीतम के चरणों के प्रेम के प्याले भर भर पीता है।

सुख और शान्ति का कोष मज़हब है

विवशताएँ, असमर्थताएँ, आवश्यकताएँ, असाध्य परिस्थितियाँ प्रायः मनुष्य को एक ऐसा जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर कर देती हैं जिसमें बनावट होती है, विद्रोह होता है, आडम्बर होता है, दिखावा होता है। विपत्तियों का समूह उसके हृदय को आहत कर देता है, मूक-वेदना से उसकी छाती फट जाती है, पीड़ा की अधिकता से अनायास ही आँसू बहने लगते हैं और जब हृदय से करुणा के गीत प्रवाहित हों, रचना का कण कण उसे मूर्तिमान संताप दिखाई देता है। संसार दुःख का रूप दिखाई देता है और वह दुःख-पीड़ा की असीम गहराइयों में उतरता हुआ ऐसे स्थान में पहुँच जाता है जहाँ स्वयं दुःख की मूर्ति बन जाता है और दुःख दर्द की कसक रह रह कर हृदय को विदीर्ण करती है।

२

इस प्रकार जब सुख और शान्ति की घड़ी प्राप्त हो तो फिर वही आडम्बर, वही बनावट, वही दिखावा, आँखों में हर्ष की झलक, मुख पर प्रसन्नता की लाली और होठों पर हलकी सी मुस्कान ! मारे हर्ष से हृदय बल्लियों उछलता है, सीना खुल जाता है और हृदय के आकर्षक और सुरीले राग वायुमण्डल में गूंजने लगते हैं। कण कण उल्लास की मुँह बोलती मूर्ति दिखाई देता है। स्वर्ग का उद्यान संसार से बाजी लगाने वाला बन जाता है और वह आनन्द और उल्लास के संसार में विचरण करता हुआ एक ऐसे स्थल पर पहुँच जाता है जहाँ वह स्वयं आनन्द की मूर्ति बन जाता है और आनन्द तथा आह्लाद से उसका रोम रोम भर जाता है।

३

यह है मानव जीवन की संक्षिप्त कहानी। हर्ष और उल्लास, दुःख और पीड़ा का हृदय--प्रिय और दुःखद सेना--दल ! कभी बेचारी दुःख--पीड़ाओं का वस्त्र लपेटना पड़ता है, कभी सुख और आनन्द का अस्थिर आवरण ! और सारी आयु इसी वेश के

परिवर्तन में व्यतीत हो जाती है। जीवन नाम है केवल आकांक्षाओं, अतृप्त लालसाओं और अभिलाषाओं का, जो कभी आह्लाद का रूप धारण कर लेती हैं और कभी वेदना का और अन्त में वह घड़ी आ पहुँचती है जब हमें इस भौतिक शरीर से विलग होना पड़ता है और हमारी सारी आकांक्षाएँ और लालसाएँ धूल में मिल जाती हैं। हृदय में एक हूक-सी उठती है, भावों को एक ठेस सी लगती है और ......एक हिचकी, और जीवन का अन्त !

४

मनुष्य का वास्तविक पथप्रदर्शक और हित चिन्तक सच्चा मजहब आदेश देता है कि हे मनुष्य ! चिरस्थायी और अविनाशी जीवन की अभिलाषा है तो मेरे प्रेम का दम भर ! और वास्तविक आनन्द का इच्छुक है तो मेरा प्रेमी बन ! मैं अविनश्वर हूँ, तुझे भी अमर बना दूंगा। मैं तुझे ऐसा जीवन प्रदान कर दूँगा जिसमें बनावट नहीं, दुःख नहीं, क्लेश नहीं, वेदना नहीं, दिखावा नहीं। यह वस्तु जिसे तू सुख समझे बैठा है वास्तव में दुःख की फाँसी है। तू मोह माया में, बस, अन्धा हो रहा है और आँखें

रखता हुआ भी नहीं देखता । अपने ही हाथों अपने गले में दु:खों की फाँसी लगा रक्खी है ।

५

मजहब ऊँचे स्वर से कहता है कि ओ मनुष्य ! जिसे तू सुख और आनन्द समझता है, आत्महत्या आत्मघात है, जो धीरे धीरे तेरी आध्यात्मिक शक्ति क्षीण करता रहता है और एक दिन वह आता है जब तू आत्मिक रूप में अर्द्ध-मृतक हो जाता है और, ओ मानव ! तू ने इस झूठे जीवन को अविनश्वर समझ कर सत्य का मार्ग हाथ से खो दिया । परन्तु

संपत्ति प्रेम और सन्तोष है, वह तुझे मेरे कोष से ही मिल सकती है। इच्छाएँ और कामनाएँ तो जीवन भर रहती हैं और इनमें नित नई बढ़ती होती रहती है और जितना भी इन्हे पूर्ण करने का प्रयत्न किया जाता है उतना ही ये पाँव फैलाती हैं और बढ़ती चली जाती हैं। यह वह अग्नि है जिस पर जितना घी डालो उतनी ही तेज होती जाती है। इस आग को बुझाओ, ठंढा करो, नहीं तो इसकी लपटें जलाकर भस्म कर देंगी। इसमें मालिक के पवित्र नाम की आहुति डालो। यह वह अमृत है जिसकी एक बूंद ही वासनाओं की आग को बुझा देती है। आओ, मेरे पास इसकी निधि है, इस निधि की कुंजी है। संसार का भय और लालच छोड़ो। तुम मेरे बनो और मेरा भंडार तुम्हारा बन जायगा और यह वह भंडार है जिसे प्राप्त करते ही तुम्हारी सभी कामनाएं और लालसाएं पूर्ण हो जायंगी !

जब बूँद और समुद्र एक हो जाते हैं

रात और काली रात, भयानक और सुनसान रात ! जब कि लैला—रजनी की लटें कमर से नीचे आ जाती हैं और प्रत्येक प्राणी मधुर स्वप्नों का रस लेता है तो मैं, ओ प्यारे ! तेरे विछोह की वेदना में व्याकुल और सतप्त घायल अधमरे पंछी की भाति तडपने लगता हूँ, मेरा हृदय काँपने लगता है, सारा शरीर थरथरा उठता है । पर कुछ समय पश्चात् ही एकदम उठ कर बैठ जाता हूँ और मेरी व्याकुल और आतुर आँखें तेरी खोज में चारों ओर घूमने लगती हैं, घर का कोना कोना छान डालती हैं एक कर देती हैं । किन्तु सब व्यर्थ, निष्फल ! चारों ओर सन्नाटा, निराशा और अतृप्ति !

× × × ×

में घर की सुन्दर छत और दीवारों पर दृष्टि डालता हूँ, वे मुझे काटने दौडती हैं, सुनसान और भयानक दिखाई देती हैं। मैं मिलन की कामना मे एक बार पृथ्वी से आकाश तक देखता हूँ, कण कण सौन्दर्यहीन और नीरस दीख पडता है। भावो का समुद्र उमडने लगता है, हृदय व्याकुल हो जाता है, रात की कालिमा और सन्नाटे भरा अन्धकार मुझे रह रह कर सताता है। जी चाहता है, इसके पजे से निकल कर कहीं दूर निकल जाऊँ!·· इन्हीं असख्य विचारों में डूबा हुआ मैं अपने आँगन में इधर उधर घूमना प्रारम्भ कर देता हूँ।

× × × ×

मेरी व्याकुलता और घबराहट क्षण क्षण बढती जाती है। मेरे विचार उन्माद का रूप धारण कर लेते हैं और मैं जल से निकाली हुई मछली की भाति तडपता हूँ, सिसकता हूँ और, वे आँसू जिनका रोकना मेरी शक्ति से परे है, मेरे हृदय का भेद प्रकट करने के लिए मेरी आँखों से टपकने लगते हैं। मैं पीडा की अधिकता से आँखें मूद लेता हूँ किन्तु वे फिर तेरी लालसा मे खुल जाती हैं, प्रत्येक द्वार दीवार

भर आते हैं और मेरी निराशा की सीमा नहीं रहती।

× × × ×

प्रियतम ! मै जलता हूँ और बुझता हूँ, मरता और मिटता हूँ, पर एक आशा, तुझसे मिलने की आशा, मेरी असफल अभिलाषाओं का सहारा है। जानता हूँ कि तुझसे मिलना सुगम नहीं है किन्तु फिर भी जलता हूँ, मिटता हूँ। जानता हूँ कि तुझे पाने का विचार तक मन में नहीं ला सकता क्योंकि तू सर्व-शक्तिमान् है और मैं एक तुच्छ कंगाल भिखारी, किन्तु फिर भी हाथ फैलाता हूँ।

× × × ×

जानता हूँ कि यह रोग असाध्य है। सब कुछ देखता हूँ, अनुभव करता हूँ पर फिर भी मरता हूँ, मिटता हूँ, जलता हूँ और घुलता हूँ कि मेरा जीवन यही है।

× × × ×

जीवनेश्वर ! मैंने अपने हृदय का भेद कभी तेरे सामने नहीं खोला, पर मैं जानता हूं कि तू इस रहस्य को जानता है। मैंने तुझे कभी बेपर्दा नहीं देखा पर मैं जानता हूँ कि करोड़ों चन्द्र और

से टकराती हैं पर सूनापन, अन्धकार और निराशा के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता।

× × × ×

परन्तु ओ प्रियतम ! इन सब असफलताओं और निराशाओं के होते हुए भी मैं कभी कभी सोचता हूँ कि यदि तू आ जाय तो क्या हो ! इसका ध्यान आते ही मेरे शरीर मे हर्ष और आनन्द की एक लहर दौड़ जाती है, मेरा रोम रोम नाच उठता है, मेरा मस्तिष्क आकाश मे उड़ने लगता है और मेरी लालसाएँ और अभिलाषाएँ अपना अंचल पसार देती हैं। किन्तु जब मैं आखें मल कर एक बार फिर उन्हें खोलता हूँ तो आह !······सूनापन, अन्धकार और निराशा के अतिरिक्त कुछ नहीं पाता।

× × × ×

जीवनेश ! कभी कभी मैं सोचता हूँ कि अपनी विनीत प्रार्थनाएं तेरे चरणों में उपस्थित करूं और वह वह कह सुनाऊं जो नहीं कहनी चाहिए। पर तू बेपरवाह है, निर्लिप्त है इसलिए मेरी प्रत्येक बात सुनी अनसुनी कर दी जायगी। बस·· यह विचार आते ही मैं फिर चिन्तित हो जाता हूँ, आँखों में आँसू

भर आते हैं और मेरी निराशा की सीमा नहीं रहती।

× × × ×

प्रियतम ! मै जलता हूँ और बुझता हूँ, मरता और मिटता हूँ, पर एक आशा, तुझसे मिलने की आशा, मेरी असफल अभिलाषाओं का सहारा है ! जानता हूँ कि तुझसे मिलना सुगम नहीं है किन्तु फिर भी जलता हूँ, मिटता हूँ । जानता हूँ कि तुझे पाने का विचार तक मन में नहीं ला सकता क्योंकि तू सर्व-शक्तिमान् है और मैं एक तुच्छ कंगाल भिखारी, किन्तु फिर भी हाथ फैलाता हूँ ।

× × × ×

जानता हूँ कि यह रोग असाध्य है । सब कुछ देखता हूँ, अनुभव करता हूँ पर फिर भी मरता हूँ, मिटता हूँ, जलता हूँ और घुलता हूँ कि मेरा जीवन यही है !

× × × ×

जीवनेश्वर ! मैंने अपने हृदय का भेद कभी तेरे सामने नहीं खोला, पर मैं जानता हूं कि तू इस रहस्य को जानता है । मैंने तुझे कभी बेपर्दा नहीं देखा पर मैं जानता हूँ कि करोड़ों चन्द्र और